Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

November 2009



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ ● Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शारदा पूजन करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा संत मंडल





आस्ट्रेलिया के एडीलेड शहर में वरयात्रा में तथा एक उद्यान में संत हरिभक्तों के साथ दर्शन देते हुये प.पू. महाराजश्री के साथ छोटे पी.पी. स्वामी तथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजी



नवा वडझर (सरखेज) श्री स्वामिनारायण मंदिर के विष्णुयाग प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री



उवारसद के पारायण प्रसंग पर वरघोड़ा में दर्शन देते हुये प.पू. महाराजश्री के साथ पी.पी. स्वामी तथा कोठारी जे.के. स्वामी



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 अंक : 31 नवेम्बर-2009

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम्	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	श्रीजी महाराज के प्रसादी के स्थल अहमदाबाद मंदिर	४
४.	पू. महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया धर्म प्रवास	६
५.	प्रभु की भक्ति का फल किसे मिलता है	७
६.	प्रातः काल पृथिवी पर उतार दिया	९
७.	धर्म के साथ भक्ति करना	१०
८.	आनंद की लहर झांगाजलिया कूआं की लीला	११
९.	सत्संग सुरभि	१२
१०.	भक्ति सुधा	१४
११.	सत्संग बालवाटिका	१७
१२.	प्रश्न पेटी	१९
१३.	सङ्गसंग समाचार	२०

सत्संगियम

एक विशाल नदी हो लेकिन उसमें पानी न हो तो ? एक सुन्दर वृक्ष हो पर उस पर पक्षी दैन वसेरा न करें तो ? एक सुन्दर पक्षी हो लेकिन उसे पंख न हो तो ? एक उत्कृष्ट बैंक हो लेकिन चेक पर खातेदार की स हन हो तो ? ये सभी वस्तुयें होने पर भी न होने के समान अनुपयोगी सिद्ध होंती है । इसी तरह हम चारे जितनी भक्ति, भजन, सेवा, सत्संग, आज्ञा, उपासना, नियम तथा दर्शन करें लेकिन यदि एक सर्वावतारी श्रीहरि में सम्पूर्ण निष्ठा न हो तो उपरोक्त सभी बातें निरपुयोगी, निष्फळ कही जायेंगी । जिस की भक्ति, सेवा, भजन करते हैं ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान की निष्ठा अपने हृदय में न होतो भक्ति व्यभिचारीणी के समान कही जायेगी । भक्ति के विषय में सम्पूर्ण भक्ति सूत्र की रचना करने के बाद नारदजी ने एक ही शब्द में उसका सार कहते हैं कि भगवान के भक्त कि निष्ठा तथा भक्ति कैसी होनी चाहिए तो "यथा व्रज गोप्यङ्गनानाम्" जिस तरह व्रज की गोपियों को थी । ऐसी निष्ठा - भक्ति यदि हम अपने हृदय में उत्पन्न करेंगे तो निश्चित ही परमतत्व की प्राप्त हो सकेगी । जिस तरह गोपिया उद्धव को कही कि हे उद्धव ? तूंम हम सभी के दुःख दूर करने के लिए माथुरा से आये हो लेकिन तुम जानते हो कि हम सभी को दुःख देने वाला तो चितचोर कृष्ण हैं । हमें जो दुःख प्राप्त है वह श्रीकृष्ण का दिया हुआ है । इस दुःख को यदि इस करना ही हो तो वे यहाँ आकर दूर करें । इसके सिवाय किसी अन्य द्वारा दिया गया सुख उन कृष्ण द्वारा दिये गये दुःख से सुखकर नहीं होगा । यही हम सभी को सुख देने वाला है । वे सुख या दुःख जो दे वे ही दें, उनके विना किसी अन्य से दिया गया सुख थोड़ा कारण ही होगा । दूसरे का आश्रय हमें ग्रहण नहीं करना है । जो हमे भगवान मिले है उनके विना अनंत ब्रह्मांड में सुख देने वाला या कल्याण करने वाला दूसरा कोई नहीं है । ऐसी दृढ निष्ठा अपने हृद यमें आजाय तो भजन - भक्ति - सत्संग का रंग चढ जायेगा । ऐसी निष्ठा युक्त भक्ति हम सभी को मिले ऐसी सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के चरणमों में हम सभी प्रार्थना करें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

अक्टूबर-२००९

१५. श्री विशाल पुजारा के यहाँ पदार्पण, मोटेरा।

१७. जीरागढ (मूलीदेश) श्री रोकडिया हनुमानजी महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद समूह शारदा पूजन अपने वरद् हाथों से धामधूम से संपन्न किये।

१८. श्री स्वामिनारायणमंदिर नारायणपुरा, नारायणघाट तथा कालुपुर अन्नकूट की आरती उतारने पधारे।

१९. नूतन वर्ष के शुभ मंगल दिन सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती अपने वरद् हाथों से उतारकर बैठक स्थल पर विराजमान होकर दर्शन - आशीर्वाद दिये।
प.भ. वसंतभाई टांक के यहाँ पदार्पण, पालडी।



२१. प.भ. बाबूभाई नारणभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, निकोल।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग पदार्पण।

२४. प.भ. रसिकभाई लालजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, थलतेज।

२५. उवारसद मंदिर (बहनों के) जीर्णोद्धार प्रसंग पर पदार्पण।

२६. प.भ. चिमनलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, मेमनगर।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर वाडज पदार्पण।

२८. श्री स्वामिनारायणमंदिर बालासिनोर पारायम प्रसंग पर पदार्पण।

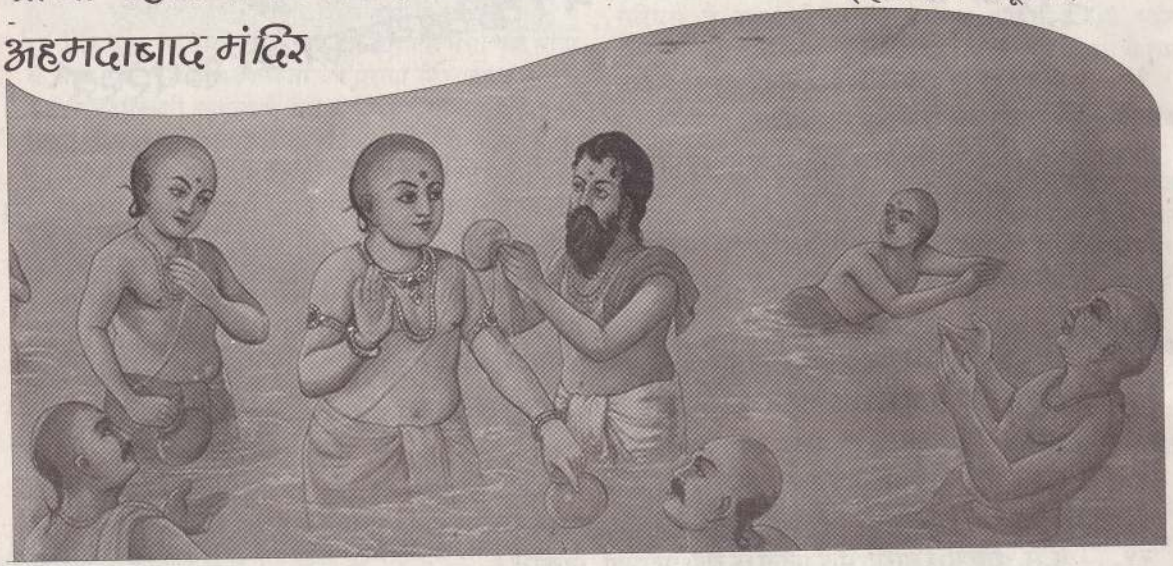
२९. संत महादीक्षा विधिअपने वरद् हाथों सम्पन्न किये।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा तुलसी विवाह प्रसंग पर पदार्पण।
प.भ. जीज्ञेशभाई सोनी के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा।

३०. बणोल (भाल) भाईयों एवं बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल (पंचमहाल) पदार्पण।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापूनगर)

श्रीजी महाराज के प्रसादी के स्थल अहमदाबाद मंदिर



श्री नरनारायणदेव का चमत्कार : जिस दिन से श्रीजी महाराज अहमदाबाद मंदिर में रहकर श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में दर्शन दे रहे हैं उस समय से आज तक कितने लोगों को चमत्कार का अनुभव हुआ है। परंतु यहाँ श्री हरिलीलामृत ग्रंथ के आधार पर कुछ चमत्कार का उल्लेख करना है।

एकदिन छगनभाई नामक एक वैश्य भक्त श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आया। दर्शन करते समय उसके मनमें एक संकल्प हुआ कि हम गाय देना चाहते हैं देव ने कहाँ हे भक्तराज हमें दूधपीने के लिये एक माय दो। छगनभाई के आनंद की सीमा न रहीं। यह सुनते ही सोना से मंडित सींगवाली गाय सवत्सा देव को भेटं कर दी।

कोइ एक परदेशी बनीया था। तीर्थ करने के लिये यहाँ आया। उसके मन में ऐसा संकल्प हुआ कि कोई देव मुझसे सोना की चयन मांगे तो मैं तुरंत दे दूंगा। सोना का चयन लेकर तीर्थ में घूमता रहा बाद में श्री नरनारायणदेव के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। मन में विचार करता ही रहा कि देव ? अनेकों तीर्थो का संकल्प यहाँ सिद्ध होगा क्या ? यह सुकनर भगवानने कहा हे वैश्यवर ? यह सुवर्ण सूत्र हमें दे दो। यह सुनकर वह आनंद से नाच उठा। उस समय कालूपुर मंदिर के महंत स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी थे, उन्हे बुलाया गया और उन्हे साथ में रखकर उस वणिकने भगवान को सुवर्ण सूत्र अर्पित किया। बाद में वह श्री नरनारायणदेव का एक निष्ठ आश्रित हो गया।

एक समय श्री स्वामिनारायण भगवान मंदिर में विराजमान थे। उस समय भगवान के दर्शनार्थ शाहपुर से दो भांट जातिके दर्शन करने आये। भगवान को प्रणाम करके दोनो हाथ जोड़कर खड़े रहे। दर्शन करते समय उनके मन में संकल्प हुआ की इन दोनों मूर्तियों में से नारायण कौन हैं ? उसमें से स्वयं भगवान नारायण अपनी अंगुली के इशारे से बताये कि में नारायण हूँ मेरे बगल में स्वयं नर हैं।

श्रीहरि कहते हैं कि मैं जो नरनारायण, लक्ष्मीनारायण, गोपीनाथ इत्यादि मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया हूँ इनमें मैं प्रत्यक्ष विराजमान रहता हूँ। फिर भी नरनारायण के रुप में अधिक रहता हूँ। इसलिये कि दुर्वासा के श्राप से नरनारायण के रुप में पृथ्वी ऊपर मनुष्य रुप में प्रगट हुआ हूँ। अपने सुख दु:ख को भगवान नरनारायण को कहें - वे अवश्य सुनेंगे।

सत्संगिभूषण अंश ४ अ. ४० में श्रीहरि से श्री नरनारायणदेव को कहा हुआ सर्वोपरिता का भाव : एक समय अहमदाबाद मंदिर में श्रीहरि फूल दोलोत्सव किये। सभामें धर्म कुंवर कहने लगे हे भक्तों। आप सभी का कल्याण हो। आप सभी एकाग्र मन से सुनिये। यहाँ

विद्यमान भगवान श्री नरनारायणदेव ही हमारे इष्टदेव हैं। सभी अवतार के कारण है। वसुदेव के घर कृष्ण के स्वरुप में स्वयं नारायण प्रगट हुये थे। जब कि नर अर्जुन के स्वरुप में प्रगट हुये थे। यहाँ श्री नरनारायणदेव हमें सबसे अधिक प्रिय हैं। इसलिये श्री नरनारायण भगवान का यह मंदिर सर्व श्रेष्ठ है। मैं अपने हृदय में सदा श्री नरनारायणदेव को रखता हूँ। श्री नरनारायणदेव सर्वोपरि भगवान हैं। मूली मंदिर में राधाकृष्ण, वृत्तालय में लक्ष्मीनारायण तथा धवलपुर में वृंदावन विहारी विराजमान है। इन सभी मूर्तियों में श्री नरनारायणदेव ही विराजमान है। सभी पुराणों में इन्ही भगवान का वर्णन है। व्यास मुनि ने श्री नरनारायणदेव को जगत के कर्ता, धर्ता, संहर्ता के रुप में वर्णित किया है। "शास्त्रयोनित्वात्।" इत्यादि वेदान्त वाक्यो में नरनारायण का ही वर्णन है। जो मनुष्य अंत समय में श्री नरनारायणदेव का ध्यान करेगा उसका अक्षरधाम निश्चित है। कलियुग के लिये श्री नरनारायणदेव कल्पवृक्ष हैं। जगत के कल्याण के लिये श्रीनगर में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल - नारायणघाट तथा साबरगंगा : साबर गंगा अहमदाबाद शहर के बीच से बहती थी। इस साबर गंगा के किनारे नारायणघाट पर श्री स्वामिनारायण मंदिर है। उत्तरा भिमुख शिखरी इस मंदिर के बीच में घनश्याम महाराज तथा उनके पूर्व में श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज एवं पश्चिम भाग में श्री नरनारायणदेव दर्शन दे रहे हैं। श्री नरनारायणदेव प्रसादी के हैं।

मंदिर के सामने साबरगंगा के किनारे दक्षिणाभि मुख शिखरी मंदिर में आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने हनुमानजीकी प्रतिष्ठा की थी। उन्ही के बगल में पूर्वाभिमुख श्रीजी महाराज के प्रसादी के महादेव हैं। श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के आचार्यश्री का अंतिम अग्नि संस्कार इसी नारायणघाट के किनारे आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री से प्रारंभ हुआ। बाद में प.पू. आचार्य देवेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री तक पांच आचार्यों का समाधिस्थान है। जहाँ आज छत्री विद्यमान है। यहीं पर महानुभावानंद स्वामी का भी समाधिस्थान है। स.गु.ब्र. श्री वासुदेवानंदजी स्वामी का भी समाधिस्थान है।

इस मंदिर में सत्संगी तथा बिन सत्संगी दोनो दर्शन करने आते हैं। नारायणघाट धार्मिक स्थान होने से यहाँ निरन्तर यज्ञ पूजा पितृतर्पण इत्यादि होता रहता है। प्रत्येक शरद पूर्णिमा को रासोत्सव खूब धूमधाम से होता है। शाकोत्सव के लिये भी यह मंदिर प्रसिद्ध है। साबरमती नदी का इतिहास भी कुछ ऐसा ही है। साबरमतीके तट पर कश्यपऋषि ने महान तप किया था। जहाँ पर सरस्वती नदी बहती रही हैं। एक दिन कश्यप मुनि नैमिषारण्य गये थे। वहाँ सभी ऋषि मिलकर कथा कर रहे थे। कश्यप ऋषि से किसी ऋषि ने कहा महर्षि ! यहि आपको हम सभी पर प्रेम होतो यहाँ पर गंगाजी को ले आइये, और यह गंगा आपके नाम से काश्यपी गंगा के नाम से प्रसिद्ध हों। ऋषियों के वचन सुनकर महादेव को प्रसन्न करके कश्यप ऋषि गंगाजी को इस पृथ्वी पर अवतरित किये। वहाँ से गंगाजीको अपने आश्रम में ले आये। यह गंगा उस समय से काश्यपी गंगा के नाम से जानी गयी। इनके दर्शन से ब्रह्महत्या का भी पाप दूर हो जाता है। यह नदी सत्युग में कृतयती, त्रेता में गिरकर्णिका, द्वापर में चंदना, कलियुग में साबरमती नाम से प्रतिष्ठित हुई। प्लक्षावतरण क्षेत्र में सरस्वती में तथा केदार में या कुरुक्षेत्र में स्नान करने से जितना फल मिलता है उतना ही फल साबरमती में स्नान करने से मिलता है।

शिवजी देवी पार्वती से कहते हैं कि हे देवी ? पितरों को प्रिय वाराणसी तथा विमलेश्वर नाम का तीर्थ प्रयागराज, सप्तधारा, केदार, गंगासागर, ब्रह्मसर ये सभी साबरमती में निवास करते हैं। क्षिप्रा नदी, हरिद्वार, नर्मदा, गंगा इत्यादि नदियों में पिंड दान करने का जो फल मिलता है, वही फल इस नदी में पिंडदान करने से मिलता है। पितरों की मुक्ति के लिये यहाँ श्राद्ध किये जाते हैं। कलियुग में साबरमती बहुतकाल तक फल देने वाली है। शिवजी कहते हैं कि हजारों मुख से भी साबरमती का वर्णन संभव नहीं है। इस नदी के किनारे ५३ तीर्थ आये हुये हैं। नारायणघाट तथा दूधेश्वर तीर्थ मुख्य है। नारायणघाट के किनारे एक समय विशाल वन था। जिसे धर्मारण्य कहा जाता था। इस धर्मारण्य में धर्म देव, मूर्तिदेवी के साथ तप करके परमात्मा नर, नारायण, हरि, कृष्ण इस चार रुप में प्राप्त किये थे। श्री नरनारायणदेव के जन्म का इतिहास तथा भगवान स्वामिनारायण की स्नान लीला इस नारायणघाट पर होने से यह महातीर्थ हो गया। श्रीहरि संतो के साथ इस नारायणघाट पर अनेको वार स्नान किये थे।

पू. महाराजश्री का ऑस्ट्रेलिया धर्म प्रवास

- पार्षद वनराज भगत (श्री स्वामिनारायण बाग, मेमनगर)

अनंत कोटि जीवों के कल्याणार्थे अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी श्रीहरि इस लोक में पधारे थे । अपनी उपस्थिति में करोडो जीवों का कल्याण किये और इस सत्संगरुपी मोक्ष मार्ग हम जैसे करोडो मानवमात्र के लिये प्रवाहित किये जिससे इसी मार्ग पर अनेको जीव चलते रहें इसके लिये अनेकों मंदिर बनवाये जिस में देवताओं की प्रतिष्ठा किये, आचार्य पद का स्थापन किये, शास्त्रों की रचना करवाये, विशाल संतो की फौज तैयार किये, जिससे सत्संग पुष्प होकर पांच प्रकार की शक्ति द्वारा समजा की रचना हो सकेगी । गाँव-गाँव में नही प्रत्येक घर में प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक पत्ते में स्वामिनारायण का नाम गुंजित हो इस हेतु से आज अभी मिलकर साकार करने का प्रयत्न चल रहा है । भगवान के भक्त जहाँ जहाँ जाते हैं वहाँ भगवान को लेकर जाते हैं । पिछले कितने वर्षो से अपने हरिभक्त आस्ट्रेलिया जाकर व्यापरा के लिये वसे हुये हैं । उन सभी भक्तों के आग्रह पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ ता. ३०-९-०९ से ११-१०-०९ तक यहाँ थे भक्तों को दर्शन तथा सत्संग का सुख देने के लिये पधारे थे । स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत) स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा पार्षद वनराज भगत इस यात्रा में महाराजश्री के साथ थे । सत्संग विकाश की कितनी चाहना जो अपने जन्म दिन पर मुम्बई होकर पर्थ की तरफ रवाना हुये । ता. २९-९-०९ को रात्रि में ९-०० बजे पर्थ पधारे थे। गादी पर विराजमान होने के बाद प्रथमवाह पू. महाराजश्री के पधारने पर भक्तों के उत्साह की सीमा न रही । करीब २०० भाई-बहन पू. महाराजश्री के आगमन पर स्वागतार्थ उपस्थित थे । मस्तक पर कलश रखकर मातायें स्वागतार्थ खड़ी थी । वहाँ के लोग यह दृश्य देखकर आश्चर्य चकित थे । ता. ३० तथा १ को सुंदर सभा का आयोजन किया गया था। दोनो दिन भक्तों के घर पदार्पण का कार्य क्रम था । भक्तों के गर महाराजश्री पधारकर शुभार्शीवचन दिये थे । पर्थ में नूतन मंदिर के लिये विशाल जमीन भी प्राप्त हो गयी है । उस जमीन पर अपने पावन चरण रखकर जल्दी मंदिर तैयार हो ऐसा आशीर्वचन दिये थे । विश्रामभाई, कांतिभाई, मनजीभाई, हरीन्द्रभाई, इत्यादि भक्तों ने पू. महाराजश्री से जल्दी पधारने का निवेदन किया था । इस प्रकार प्रार्थना के साथ पू. महाराजश्री पर्थ से मेलबोर्न के लिये प्रस्थापित किये थे ।

ता. ३-१०-०९ से ९-१०-०९ तक महाराजश्रीने मेलबोर्न के भ्कतों को सत्संग का सुख दिया तथा उनके घरों में पधारकर उन्हे आशीर्वाद भी दिया । ४ दिन तक मेलबोर्न के रींग बुड विस्तार में सत्संग सभा का लाभ भक्तों को दिया । बाद में सीटी विस्तार में बहुत सारे विद्यार्थीयों को लाभ देने के लिये "पाइन्ट कुक" पधारे थे ।

वहँ के सभी भक्तों को अपने दिव्य वचनों से तृप्त किया था । सभा के समय भक्तों ने पू. महाराजश्री का दिव्य स्वागत किया था । लेझिम - बैंड बाजा के साथ भारतीय संस्कृति की झांकी का दृश्य उपस्थित कर दिया था । मेलबोर्न में भी मंदिर के लिये एक मकान लिया गया । वहाँ जल्दी मंदिर बने इसके लिये महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया । दीपकभाई, रमेशभाई, जयेशभाई, राजूभाई, गौरांगभाई ईत्यादि भक्तोंने महाराजश्री के समभ सत्संग विकास की चर्चा की । मेलबोर्न के भक्तों को संतुष्ट करके पू. महाराजश्री एडीलेड पधारे थे ।

ता. ८-१०-०९ से ११-१०-०९ तक पू. महाराजश्री एडीलेड पधारकर भक्तों के मनोरथ को पूर्ण किये थे । पर्थ तथा मेलबोर्न की अपेक्षा एडीलेड एक छोटा शहर है । भक्तों की संख्या कम है । लेकिन उत्साह बहुत है । सुंदर सत्संग सभा, प्रश्नोतरी द्वारा युवानो को संशय रहित कर दिया था । प्रेरक मार्ग दर्शन देकर पू. महाराजश्रीने सभी को अपना बना लिया था । सभी के मनमें ऐसा होने लगा था कि इतने नजदीक रहने का अवसर पूर्व में नहीं था संभव है कि भविष्य में मिलता रहे । महाराजश्रीने सभी

(अनुसंधान नं. ८ पर)

प्रभु की भक्ति का फल किसे मिलता है

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)



संसार के प्रत्येक मनुष्य अपने इष्टदेव की भक्ति करते ही रहते हैं । प्राय: सभी लोग सुखी रहने के लिए भक्ति करते हैं । आत्म कल्याण का विचार तो किसी-किसी को होता है । आत्म कल्याण का विचार करने के बाद भी प्रगट ब्रह्म श्री स्वामिनारायण भगवान की पहचान करना कठिन हो जाता है । यदि परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की पहचान सरलता से हो जाय तो मनुष्य जीवन सार्थक हो जाता । अनेक जन्मों के सुकृत के पुण्य का उदय होने पर ही श्री स्वामिनारायण भगवान की पहचान संभव है । हमें पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान मिले हैं, जो प्रगट ब्रह्म हैं । इसकी स्पष्टता स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण ने अहमदाबाद के ७ वें वचनामृत में की है । "आ अवनी पर एवुं जे श्री पुरुषोत्तमनुं धाम तेमां गया त्यां पण हुंज पुरुषोत्तम छुं, मारा विना बीजो कोई देख्यो नथी केटले ठेकाणे फर्या अने पछी एम देहने विषे आत्मा अने पेर अंतर सामे जोयुं त्यारे एम जणायुं जे सर्वे ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय तनो कर्ता पण हूं छुं, ने अनंत ब्रह्मांडो नां असंख्य शिव, असंख्य ब्रह्मा, असंख्य कैलास, असंख्य वैकुंठ, अने गोलोक, ब्रह्मपुर अने असंख्य करोड बीजु भूमिकाओ ए सर्वे माटे रोजे करीने तेजोयमान छे अने हुं वळी हुं केवो छुं तो मारा पग ने अंगुठे करीने पृथ्वी ने डगावुं तो असंख्य ब्रह्मांडनी पृथ्वी डगवा लागे ने माटे तेने फटीने सूर्य, चंद्र. तारा आदिक सर्वे तेजोमान छे । एवो जे हुं ते माटे विषे एम समझीने निर्णय करे तो भगवान एवो हुं सर्वोपरि एवुं जे धाम तेने बगाडीश" इस तरह श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं प्रगट पुरुषोत्तम की प्रतीत्रि करायी थी । इस प्रकार परमात्मा को जानकर जो भजन भक्ति करते हैं उन्हें नवधा भक्ति में दृढता आती है । श्रीजी महाराज की मूर्ति को हृदय में उतारने से आत्म शांति मिलती है । इस बात को वचनामृत में भी महाराज ने कहा है कि भजन भक्ति या कीर्तन करने से मन एकाग्र होता है । भजन-भक्ति या कीर्तन से नवधा भक्ति हृदय मे प्रगट होती है । नवधा भक्ति कैसे करे - प्रदक्षिणा करना, दंडवत प्रणाम करना, माला फेरना, जनमंगल का पाठ करना इत्यादि साधनो से प्रभु की प्रसन्नता मिलती है । इस प्रसन्नता से ही महाराज की भक्ति भी दृढ होने लगती है ।

इस लिये भक्ति की प्रत्येक क्रिया में महाराज की मूर्ति का बल रखने से भक्ति फलदायी होती है। भजन-भक्ति के समय व्यवहार की वात नही करनी चाहिये। यदि ऐसा करते हैं तो सभी पूजा-पाठ ध्यान-जप श्रम मात्र रहजायेगा श्रीजी महाराज ग.म.प्र. ४१ वें वचनामृत में कहते हैं कि - "भक्ति नो फल भगवाननी प्रसन्नता ने अर्थे ने पोताना कल्याण ने अर्थे करवी, पण कोई वखाणे तो अहं न करवी, जातनो स्वभाव छे जे जेमां पोताने मान जडे तेज करवुं सारुं लागे। जेम श्वान होय तो सूका हाणका ने एकले जई ने करडे, पंछी तेने करीने पोतानुं मोढुं छोलाय तो ते हाणकुं लोहीवाळुं थाय तेने चावीने राजी थाय छे। पण मूर्ख एम नथी जाणतो जे माराज मोढानुं लोही ने स्वाद मानुं छुं. तेम भगवान जो जाणी होय तो पण मानरुपी हाणकाने मूकी शकतो नथी अने जे जे साधन करे छे ते मानने वश थईने करे छे. पण केवल भगवाननी भक्ति जाणीने भगवाननी प्रसन्नता ने अर्थे करतो नथी। भगवाननी भक्तिमां माननो स्वाद आवे छे त्यारे डरे छे। इस तरह अपने जीवन में हो तो स्वयं चिन्तन करना चाहिये और सुधार कर लेना चाहिये। इसी विषय पर महाराजने कहा कि जो अपने मन का परित्याग करके श्रीजी महाराज की आज्ञा में रहकर भजन-भक्ति करेंगे उन पर श्रीजी महाराज की असीम कृपा होगी। सतत ख्याल में रखना चाहिए की श्रीहरि की भक्ति थोडे पुण्य से प्राप्त नहीं होती। अपने बहुत सारे जन्मों के पुण्य से प्राप्त हुई है। श्री स्वामिनारायण भगवान के सिवाय कोई ऐसा नहीं जो आत्मा को सुखी कर सके। मूर्ति में संलग्न होकर भक्ति करने से फलदायी होती है। इसलिये प्रभु की महिमा का ज्ञान करके अग्रताक्रम में भक्ति करनी चाहिये। व्यवहार के सभी कार्य पूर्ण करने पर की गयी भक्ति भी निम्न फल देने वाली होती है। ऐसी भूल कभी नहीं करनी चाहिये। करोडो जन्म के बाद मनुष्य जन्म मिला है यह ध्यान रखकर किसी की प्रेरणा के विना भजन भक्ति करनी चाहिये। सावधान होकर प्रगट ब्रह्म की स्वामिनारायण भगवान की प्राप्ति हुई है यह समझकर इस जन्म को सफल करलेना चाहिये। आलस्य-प्रमाद-मान-मोह इत्यादि का त्याग करके, जगत संबंधी व्यवहार-त्यौहार इत्यादि को गौड़ करके महाराजकी आज्ञानुसार भजन-भक्ति करलेनी चाहिये, इसी में सभी का कल्याण है। अस्तु, जय श्री स्वामिनारायण।

पू. महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया धर्म प्रवास पेज नं. ६ से आगे

को आशीर्वाद दिया कि यहाँ का सत्संग दिनरात बढता ही रहे। पू. महाराजश्री ता. ११-१०-०९ को वहाँ से भारत वापस पधारे। रमेशभाई, मनीषबाई, अरविंदभाई, घनश्यामभाई तथा पुरुषोत्तमभाई इत्यादि भक्ति महाराजश्री के सत्संग का लाभ लेकर कृतकृत्य हो गये।

पू. महाराजश्री एप्रिल-०९ में सीडनी पधारे थे। एप्रिल-१० को पुनः पधारने का वाले हैं। इस समय पू. महाराजश्री के दर्शन का लाभ लेने के लिये सीडनी ब्लेक टाउन मंदिर के सभी केमेटी के सदस्य तथा अन्य अनेक हरिभक्त पधारे थे। पू. महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद देते हुये कहा कि आप सभी सत्संग की रक्षा के लिये सतत प्रयत्नशील रहना। पू. महाराजश्री की आज्ञा से पी.पी. स्वामी, राम स्वामी ७ दिन के लिये सीडनी पधारे थे। वहाँ पर सत्संग एवं कथा करके हरिभक्तों को संतुष्ट किया।

पू. महाराजश्री जब स्वयं इतना सत्संग के लिये पुरुषार्थ करते हैं तो हमें भी यथा शक्ति प्रयत्न करना चाहिये। अपने सगे संबंधी जो भी वहाँ रहते हों वे सभी मंदिर में या सभा में अवश्य जांय ऐसी सभी को प्रेरणा

प्रातः काल पृथिवीं पर उतार दिया

- प्रो. महादेव धोरिया (राजकोट)

ग्वालियर के राज गवैयाओ का शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लोग पुरस्कार प्राप्त करने की आकांक्षा से जुनागढ आये थे। जुनागढ के नवाब साहब ने ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, देवानंद स्वामी आदि के बुलंद कंठ से शास्त्रीय संगीत को सुना था श्री सहजानंद स्वामी जब पृथिनी पर थे उस समय शास्त्रीय संगीत की बोलबाला थी।

नवाबने आगंतुको से कहा, भाईयो ! आप लोग ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी इत्यादि परमहंसो से संगीत सुनेंगे तो आप सभी का अहंकार खत्म होजायेगा। हुआ ऐसा ही ग्वालियर के संगीतज्ञ नवाब के निर्देशानुसार गढपुर के लिये निकल गये। जाते समय नवाब ने सभी का उचित सत्कार करके गमनागमन का मार्ग व्ययदेकर विदा किया। वे सभी राज सेवकों के साथ गढड़ा पहुँच गये। सहजानंद स्वामी को सायंकाल बातें बतायी। महाराज ने कहा, उन सभी संगीतज्ञों को उचित स्थान पर निवास की व्यवस्था कराके आराम करवाया जाय, बाद में संगीत सुनी जायेगी।

सायंकाल सभी एकत्रित हुये। महाराज उच्च स्थान पर विराजमान हुये। प्रेमानंद स्वामी एवं ब्रह्मानंद स्वामी को आज्ञा किये कि आप सभी प्रथम संगीत आरंभ करें। वे अपने संगीत की साज सज्जा को तैयार करके महाराज से पूछे कि किस राग में आरंभ करें।

श्रीजी महाराज ने कहा भैरव राग मे।

सभी आपस में चर्चा करने लगे कि भैरव राग तो प्रातः गाया जाता है। उसी में किसी ने कहा कि गुजराती लोगों को गाड़ा कहा जाता है, प्रातः के भैरव राग को सायंकाल गाने को कह रहे हैं। अन्तर्यामी के आदेशानुसार प्रेमानंद स्वामी अधोनिर्दिष्ट पद को भैरवराग में गाना प्रारंभ किये। ब्रह्मानंद स्वामी तबला लेकर सज्ज हो गये। मुक्तानंद स्वामी सारंगी का सुर छोड़े।

"चंदन चर्चित नील कलेवर,
सुदंर कटितट कस्यो पटपीत ॥
प्रेमानंद प्रीतम प्यारे की,
छबि पर तन मन बलि जाऊँ ॥
नित..... नित....."

इस ध्रुव पद के गाते ही गढपुर में हवा का रुख बदल गया। सर्वत्र प्रभात का वातारण हो गया। आकाश में जो संध्या खिली थी वह सूर्योदय के रुप में भासने लगी। इतना ही नहीं बल्कि मूर्गे भी बाग देने लगे। सभी के आश्चर्य की सीमा न रही। ग्वालियर के गायक प्रेमपूर्वक प्रणाम करके कहने लगे। प्रभु ! अब हमें ख्याल आया कि आप सायंकाल भैरवराग क्यों गवाये।

दूसरे दिन ब्रह्मानंद स्वामी की संगीत को सुनकर तो उन सभी के आश्चर्य की सीमा न रही। महाराज उन सभी को पांच दिन तक रोके, वे सभी नाना प्रकार के संगीत महाराज को सुनाते रहे। शिरपाल तथा ब्रह्मानंद स्वामी का पत्र लेकर राजगायक जूनागढ आये। नवाब तीन दिन तक मंत्र मुग्धहोकर संगीत सुने। बाद में उन्हें भेंट सौगात देकर बिदा किये, उस समय उन सभीने कहा, गढडा हमें जीवन भर याद रहेगा। नवाब ने कहा, स्वामिनारायण तो स्वयं खुदा है। उनसे दीक्षा लिये संत तो प्रकाश स्वरुप है।



धर्म के साथ भक्ति करना

- किशोर भगत गुरु पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम)



जिसे इस दु:खरुपी संसार के बंधन से छूटकर आत्यांतिक मोक्ष प्राप्त करके प्रभु के अक्षरधाम प्राप्त करने की इच्छा हो तो उन्हे धर्म, ज्ञान, वैराग्य के साथ भगवान की भक्ति करनी होगी।

गृहस्थ तथा त्यागी के लिये शिक्षापत्री, धर्मामृत तथा निष्काम शुद्धि आदि के विषय में श्रीजी महाराजने बातें कही है। उसी अनुसार उन्हें धर्म का पालन करना चाहिए।

शिक्षापत्री में कहा गया है कि श्रुति-स्मृति से प्रतिपादित सदाचार ही धर्म है। जीव, माया, ईश्वर की पहचान को ज्ञान कहा गया है। परब्रह्म परमात्मा ऐसे श्रीकृष्ण भगवान के सिवाय दूसरे पदार्थ में प्रीति न करना ही वैराग्य है। इस प्रकार तीनों अंगों के साथ भगवान की भक्ति करना ही भक्ति है, इसके साथ श्रीकृष्ण भगवान के माहात्म्यज्ञान के साथ जो भक्ति वही भक्ति है।

इस तरह नव प्रकार की भक्ति का मस्तक धर्म है। ज्ञान भक्ति का हृदय है। वैराग्य भक्ति का चरण है। धर्म के लिये तीनों अंगो के साथ भगवान की भक्ति करना, इस प्रकार की भक्ति को एकांतिक धर्म कहा जाता है। इसे ही भागवत धर्म कहते हैं। ऐसी भक्ति करने वाले को एकांतिक भक्त या भागवत भक्त कहा जाता है। इस प्रकार की भक्ति के विना सत्संग संभव नहीं।

संभी अवतार के अवतारी श्री पुरुषोत्तम नारायण भगवान के स्वरुप, स्वभाव, गुण-ऐश्वर्य ऐसे अनंत कल्याणकारी गुण से युक्त समझना चाहिये। जिस शास्त्र में ऐसे प्रभु का वर्णन हो, उनके चरित्रों का वर्णन हो ऐसे शास्त्र का पठन-पाठन करना चाहिये। उन शास्त्रों में जैसा कहा गया हो वैसा ही वर्तन करना चाहिये। एकांतिक साधुओं के लक्षण को शास्त्र द्वारा जानकर तथा सज्जन पुरुषों की पहचान करके उन्हीं का सत्संग करना चाहिये। भगवान के धाम-श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर इत्यादि धामों का अनुचिन्तन करते हुये उत्पत्ति, स्थिति, लयरुप जो भगवान के अवतार उनका चिन्तन करना चाहिये। इस तरह करने से भगवान के विषय में भक्ति उत्पन्न होगी तथा वह जिसमें भक्ति प्रबल होने पर ही उसे एकान्तिक भक्त कहा जायेगा। भगवान की भक्ति करते समय जो भी अन्तराय हों उन्हें दूर करके भक्ति को ही प्रधान रखना चाहिये। कारण यह कि वचनामृत में श्रीजी महाराज ने कहा है कि भगवान की भक्ति धर्म-ज्ञान-वैराग्य इन तीनों अंगो के साथ करना ही श्रेष्ठ है। इससे अधिक कल्याण कारक और कोई साधन नहीं है।

आनंद की लहर ङ्गंगाजलिया कूआं की लीला

- स्वामी हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर स्वा. मठदिर)

गढडा मैं एकबार पानी की तकलीफ हो गयी। श्रीहरि का भक्त नाथा महाराज के लिये गाँव में पानी भरने गया। कितने आसुरी तत्व पानी भरने नहीं दिये। नाथा भक्त बहुत उदास हो गया।

महाराजने कहा आप चिंता मत करो। हम पानी की कमी दूर करने के लिये दरबार गढ में कूँआ खोदायेंगे। यह सुनते ही फरसा कुदाल इत्यादि लेकर सभी एकत्रित हो गये। खोदने का कार्य प्रारंभ हो गया। करीब पचास हाथ नीचे तक खोदाया होगा कि पत्थर की चट्टान आ गयी। सभी महाराज से कहने लगे महाराज ! विशाल पत्थर आ गया, अब पानी की संभावना कम है। महाराजने कहा आप सभी चिन्ता मत करो विपुल पानी निकलेगा।

महाराज के पार्षद लाभ भाई अकेले ही कूँआं खोदने लगे जितनी तेज खोदने का काम करते महाराज को चोट लगती। महाराज ने पूछा कौन खोद रहा है। किसी ने कहा महाराज लाभ भगत है। यह सुनकर महाराज स्वयं अपने आसन से कूंआ के पास आये भक्त उनका आसन बिछादिये महाराज उसी पर बैठ गये। अपने आसन में से एक टूकड़ा फाड़कर लाभ भगत के ऊपर गिरादिये और कहे कि यह प्रसादी का है इसे रखियेगा। यह सेवा करने का फल उन्हें मिल गया। कूँआ खोदते-खोदते लाभ पार्षद को भूख लग गयी, उधर पत्थर टूट नहीं रहे थे, दूसरी तरफ भूख की पीड़ा। इस बात को महाराज समझ गये। रसोइया को बुलाकर कहे हमें बहुत भूख लगी है जल्दी भोजन बनाकर ले आओ। तुरंत ही रसोइया गरम-गरम बाजरी को रोटी-गुण-घी लेकर आ गया। सभी एकत्रित करके महाराजने अपने मस्तक की पगड़ी उतारकर उसी में बाधा और कूंए के पास जाकर लाभ भगत को टुपट्टे के भीतर बांधी हुई रोटी-गुण-घी सभी लटका दिये।

लाभ भगत ने कहा प्रभु ! आप इतनी तकलीफ क्यों कर रहे हैं। महाराजने कहा लाभ ! तुम भूखे हो, इसलिये मेरे मन में हुआ कि जो तनतोड़ परिश्रम कर रहा है, उसे भूख भी लगी है तो पहले उसे भोजन कराना चाहिये। इसलिये यह प्रसाद नीचे उतारे है। यह प्रसाद ग्रहण करके आप पत्थर तोड़ेगे तो तुरंत पत्थर कट जायेगा। हुआ भी ऐसा, पत्थर कटते ही इतना अधिक पानी का भन्डार निकला कि पानी कभी कमी ही नहीं हुई। महाराज उस कूये का पानी प्रथम ग्रहण किये बाद में अन्य सभी उस पानी को प्रसाद ग्रहण करते रहे।

कुछ दिन के बाद कोई ब्राह्मण गंगाजल लेकर वहाँ आये। उसमें से गंगाजल लेकर अपने मस्तक पर चढाये और बाकी उस कूये में डाल दिये। बाद में उस कूये के जल का महत्व समझाते हुये कहें कि आज से इस कूयें का नाम गंगाजलिया कूँआ रहेगा। इसका जल गंगाजल की तरह पवित्र होगा। सभी महाराज को उसी कूयें के जल से स्नान कराया। महाराज की जय के नाद से आकाश गुंजादिया। सभी को बहुत आनंद आया।

अहमदाबा मंदिर में श्री नरनारायणदेव का दैनिक प्रसाद-सांध्य भोग

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सायंकालीन पक्का भोग कुछ समय से प्रारंभ किया गया है। इसलिये जो भावुक भक्त है वे सायंकालीन भोगन (प्रसाद) कराने के इच्छा वाले हों तो कोठार की आफीस में ५००/- रुपये भकर रसीद प्राप्त करलें। सायंकालीन भोग (प्रसाद) की रसीद नहीं दी जाती।

सत्संग सुरभि

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

सुख्यो न थयो लीलो पण आलम बन्यो अमीर !

बोटाद के पास राणपुर गाँव में सूखा महाराज रहते थे। गढपुर में श्रीजी महाराज से मुलाकात होने पर कंठी बांधकर सत्संगी हुये थे। पवित्र ब्राह्मण थे। यजमानवृत्ति करके जीवन पाप न करते थे। घर भरा पुरा था परंतु दान करने में संकुचित स्वभाव के थे। श्रीजी महाराज जहाँ रहते वहाँ वहाँ आनंद ही आनंद होता। सूखा महाराज गढडा में ही रहते थे। कथा प्रवचन सुनते और प्रतिदिन नये भोज्य पदार्थ खाते। काठी दरबार राणपुर जाकर पता लगाया की सुखा महाराज को तो भीख मांग कर खाने कि आदत पड़ गयी है। लेकिन वास्तव में उनका घर हरा भरा था। एकबार सुरा खाचर ने कहा प्रभु ! सूखा महाराज कई दिन से संकल्प करते हैं कि महाराज सखाओं के साथ मेरे घर पधारे और मुझ गरीब का घर पावन करें। प्रभु ! आप अन्तर्यामी है। आपको सूखा महाराज के घर पधारना पड़ेगा। यह सुनकर महाराज मुस्कराते हुये सूखा महाराज की तरफ देखे।

हे महाराज ! आपको पधारना ही होगा। आप कहिये आप कब पधार रहे हैं।

महाराज ने कहा आप का भाव है तो अवश्य आपके यहाँ पधारेंगे। राणपुर तो लोया जाते समय मार्ग में आता है। जब भी उधर से निकलेंगे आपके यहाँ अवश्य आयेंगे।

सम्वतं १९८४ में अन्नकूट करमड़ में करने के लिये निश्चित किया गया। धोलेरा के दरबार जेठीभाई की बहन फूलजीबा के आग्रह पर महाराज से आज्ञा लेकर करमड़ में अनन्कूट किया गया। उस समय महाराज चातुर्मास गढपुर में कर रहे थे। महाराज प्रतिदिन नयी - नयी कथा करके सभी को प्रसन्न करते। एक दिन सभा के बाद सूखा महाराजने श्रीहरि से कहा महाराज ! हमारा निमंत्रण मत भूलियेगा। महाराजने कहा हमें याद है। इसबार का अन्नकूट धोलेरा के पास करमड़ में करना है। उस समय जाते समय दोपहर में भोजन आपके यहाँ लेंगे।

जब महाराजने कहा, आपके यहाँ भोजन करेंगे, यह सुनते ही विचार में पड़ गये। अरे सूखा महाराज ! कहाँ खो गये। हाँ महाराज यह विचार करने लगा कि आप की रसोई में क्या तैयारी करवायें। सुराखाचर ने कहा साटा-जलेबी, इससे अधिक कुछ करना होतो माल पूआ तथा खीर बनवाइयेगा।

महाराज मुख में रुमाल देकर हंस रहे थे। सूखा महाराज तो यह सुनकर पसीने-पसीने हो गये। महाराज उनका अनुमान लगालिये थे।

सूखा महाराज महाराज से विदा लेकर राणपुर आ गये। पत्नी तथा बेटों कों एकत्रित करके सभी बात बता दी और कहे कि देखो प्रभु भले दोपहर की बात किये हैं लेकिन कभी भी वे आसकते हैं। इसलिये सावधान रहना होगा।

संत-हरिभक्तों, काठी दरबारों को लेकर महाराज करमड़ जाने के लिये निकल पड़े। बोटाद रात रहकर दूसरे दिन राणपुर पधारे। संघ राणपुर के बजार में से निकला, उस समय वहाँ के भक्त जीवरामभाई सूखा महाराज के घर के पास ले गये। वहाँ स्वयं महाराज पधारकर घोड़ी से नीचे उतरे और दरवाजा खटखटाये। दरवाजा सूखा महाराज का बेटा खोला तो देखा महाराज खड़े है, देखते ही कहा अरे महाराज आप ? पिताजी तो नहीं है। दूसरे गाँव में गये है। हम आपकी याद सदा करते रहते हैं। लेकिन अब क्या किया जाय ? फिर आप कब पधारेंगे।

अन्तर्यामी से क्या छिपा रह सकता है ? सूखा महाराज दालान में सो रहे थे, इस बात को महाराज जान रहे थे। खड़े खड़े महाराज मुस्करा रहे थे। सुरा खाचर ने कहा महाराज ? यह सूखा महाराज आज तक गढडा में रहकर कितना घी-शक्कर खा गये होंगे लेकिन इनकी भाग्य खराब थी कि आज ही दूसरे गाँव जाना हुआ। उन्हें ख्याल तो था हि आप यहाँ पधारने वाले हैं। उन्हे यहाँ रहना चाहिये न ?

करुणासागर श्रीहरिने कहा "इनका नाम ही सूखा है हम तो इन्हें हराभरा करने के लिये स्वयं इनके घर आये लेकिन लेकिन भाग्य में हराभरा नहीं रहना है, सूखे के

सूखे ही रहेंगे । ऐसा कहकर माणकी पर सवार होकर चल दिये ।''

चलो हमारे एक भक्त इसी गाँव में बड़े मिया रहते हैं उनसे मिलकर चलते हैं। सभी संघ बड़े मिया के घर की तरफ चला, रास्ते में उनका घर सभी पूछ रहे थे कि उसी समय बड़े मिया का लड़का आलम देखा कि श्रीजी महाराज स्वयं यहाँ पधारे हैं उसे बहुत आनंद हुआ ।

पिता बड़ेमियां के साथ उगामेडा गांव में महाराज का एकबार दर्शन हुआ था, उसी समय उनके मन मे यह था कि प्रभु ! जब भी आप राणपुर में पधारियेगा तब मेरे घर को भी आप पावन कीजिएगा । वही भाव का स्मरण करके महाराज आज बड़ेमिया का घर पूछ रहे हैं । भले वह मुसलमान हो लेकिन भगवान में भक्ति होने से प्रभु के लिये सभी समान है । इसलिये सामने से चलकर बड़ेमियां के घर पधारने आये हैं । उस १६ वर्ष के बालक में पिता का संस्कार था इसलिये महाराज के पास जाकर दंडवत प्रणाम किया । तुम कौन हो ? महाराजने पूछा ।

मैं आलम मियां ''बडेंमिया का बेटा ।''

बड़ेमिया किधर गये ।

वे अहमदाबाद गये ।

''अच्छा, चलो हम चलते हैं ।''

''आप रुकिये तो सही, आप कैसे पधारे ?''

महाराजने कहा बड़ेमियां जब मेरे दर्शन के लिये आये थे उस समय वे कहे थे कि आप राणपुर जब पधारे तब मेरे घर भी दर्शन दीजियेगा । लेकिन वे इस समय घर नहीं है । लेकिन मैं तो हूँ न ? प्रभु ! वे घर को साथ लेकर नहीं गये हैं । मेरी मां भी आपकी याद करती है । आप घर में पधारिये ऐसा कहकर माणकी घोड़ी की लगाम पकड़ लिया ।

आलम अपने घर गया । अम्मा को सभी बात बता दी । उस के आनंद की सीमा न रही । वह दौड़ते हुये बाहर आयी । महाराज को दूर से प्रणाम करते हुये कहने लगी हे परवरदीगार । आप घर में पधारिये ।

यह घर आप का है । ऐसा कहकर खटिया गिराकर उस पर गद्दा-चादर बिछाकर महाराज को बैठाई । सामने ब्राह्मणों का घर था, वहीं पर रासन मंगवाकर ब्राह्मणो से रसोई बनवाकर महाराज के साथ सभी संघ को भोजन कराया ।

महाराज भोजन के लिये मना करते रहे लेकिन वह नहीं मानी । हे प्रभु ! आप को भूखे नहीं जाने दूंगी । घर आये कोई भूदेव भूखे नहीं जाता, आप तो हमारे प्रभु हैं । आप यही भोजन करो, आराम करो । आलम के साथ महाराज कुछ हित की बातें की । आलम के मन में महाराज बस गये ।

ब्राह्मणों ने खिचड़ी, कढी, शाक तैयार कर दिया, ब्राह्मणियों ने रोटी बनाया । सभी अभ्यागत महाराज के साथ बैठकर पेटभर भोजन करके संतुष्ट हो गये ।

आज एक मुसलमान मा-बेटे संघ सहित परवरदिगार को भोजन कराकर जीवन को कृतकृत्य मान रहे थे । दूसरी तरफ सूखा महाराज तो कोरे के कोरे ही रह गये ।

श्रीहरि हंसते हुये कहे कि, सुरा खाचर ! किसे धन्यावद दिया जाय । बड़ेमियां को, उनकी पत्नी को या आलम को ?

प्रभु ! धन्यवाद तो सूखा महाराज को देना चाहिये । यदि सूखा महाराज निमंत्रण नहीं दिये होते तो हम सभी यहाँ कैसे आते ।

महाराज हंसते हुये कहे कि ब्राह्मण कोरा का कोरा ही रह जाता है ।

मुसलमान यद्यपि सत्संग से अलग रहता है, उसका संस्कार अलग रहता है, फिर भी आत्मा संस्कारी होने से भगवान तथा भगवान के संत को आलम मियां पहचान गये । जिससे उनका तथा उनका परिवार हरा भरा हो गया । बड़ेमिया के परिवार का प्रसाद ग्रहण करके श्रीहरि उन्हें कृतार्थ कर दिये ।

सभी महाराज के साथ आये संघ को बाहर तक छोड़ने गये आलम महाराज के घोड़ी की लगाम पकड़कर आगे चल रहा था । गाँव के बाहर जाकर महाराजने सभी को वापस किया । बिदा होते समय आलमने महाराज से कहा कि प्रभु ! हम सभी पर दृष्टि रखियेगा ।

सभी देख रहे थे कि श्रीहरि की करुणामयी आँखो से स्नेह की धारा बह रही थी । संघ लोया में रात्रि के समय विश्राम किया । लेकिन महाराज पुनः वापस न आ जाए इसलिए सूखा महाराज अपने घर को बन्द करके रखे थे । उधर उसी गाँव का आलम मियाँ सर्वेश्रेष्ठ अमीर बन गया था अपने प्रेममय भावो से श्रीहरि के स्नेह का पात्र बन गया।



प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से मनुष्य शरीर परमात्मा की अमानत

संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

इस जगत को किसने बनाया ? श्रीजी महाराज ने बनाया है । श्रीजी महाराज कैसी रचना किये जो सभी व्यवस्थित एक दूसरे से हिलमिलकर रह सकते हैं । एक परिवार का अगुआ यह चाहता है कि परिवार में जितने लोग हैं सभी हिल मिलकर रहें । परंतु आज मनुष्य का सिद्धान्त बदल गया है । ध्येय बदल गया है । मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिये । वह अन्त्व को भूलता जा रहा है । जब उसे ख्याल आता है तब तक बहुत देर हो चुकी रहती है । आज आदमी जब कोई इन्टरव्यू या एडमीशन के लिये जाता है तब कुछ पहचान बतानी पड़ती है । उसका मुख्य कारण क्या है ? इस का मुख्य कारण यह है कि परमात्मा की डर । परमात्मा की डर से वह भजन करता है, श्रद्धा से नहीं । यद्यपि ऐसा नहीं होना चाहिये, परमात्मा में ही अटूट श्रद्धा होनी चाहिये । एक व्यक्ति को एक समय इन्टरव्यू देना हुआ, उस समय आफिस में अधिकारीने पूछा कि किसी बड़े व्यक्ति का परिचय पत्र ले आये हो ? तब सामने वालेने उत्तर में कहा कि परमात्मा ने जो शरीर दिया है वही सबसे बड़ी पहचान है । परिचय पत्र है । यह शरीर स्थायी तो रहने वाला नहीं है । शरीर परमात्मा की सबसे बड़ी भेट है । पुनः परमात्मा को वापस करनी पड़ेगी । जीवात्मा के साथ कारण शरीर भी जुड़ा हुआ है । इससे अधिकाधिक गुण एकान्तिकता में होना चाहिये । इस शरीर में किसी प्रकार की दाग न लगे यह सतत ध्यान रखना चाहिये । कोई व्यक्ति कोई वस्तु रखने के लिये दे कैसा लगेगा ? वह स्वीकार करने के लिये मना कर देगा । नयी देनी पड़ेगी । इसी तरह भगवानने हमें जो शरीर दिया है वह साथ लेकर नहीं जाना है, उन्हें पुनः वापस करना है इसलिये उसका विगाड़ न हो यह सदा ध्यान रखना चाहिये । अन्यथा चौरासी लाख योनि में भटकना पड़ेगा ।

अन्त में सद्गुणों को प्राप्त करने के सन्दर्भ में प.पू. गादीवाला कहती हैं कि मोक्ष प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का ध्येय है । इसलिये जीवन में किसी का अवगुण नहीं देखना चाहिये, किसी का अहित नहीं करना चाहिये, किसी से ईर्ष्या, राग, द्वेष इत्यादि नहीं करना चाहिये । मनुष्य सदा इन दोषों को देखता है इसलिये पतन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, जब इससे रहित हो जाता है उन्नत का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, यही दोनों में अन्तर में । सुख दुःख का कारण भी यही है । कर्म फल प्रदाता ईश्वर है । ईश्वर मय दृष्टि हो जाय तो राग-द्वेष अपने आप निकल जायेगा । परिणाम स्वरुप जीवन में शांति मिलेगी अन्त में शांति मिलेगी अन्त में जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति भी संभव हो जायेगी । इसलिये हम सभी साथ में मिलकर प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा का पालन कर सके ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना । नूतन वर्षाभिनन्दन के साथ जयश्री स्वामिनारायण ।

●

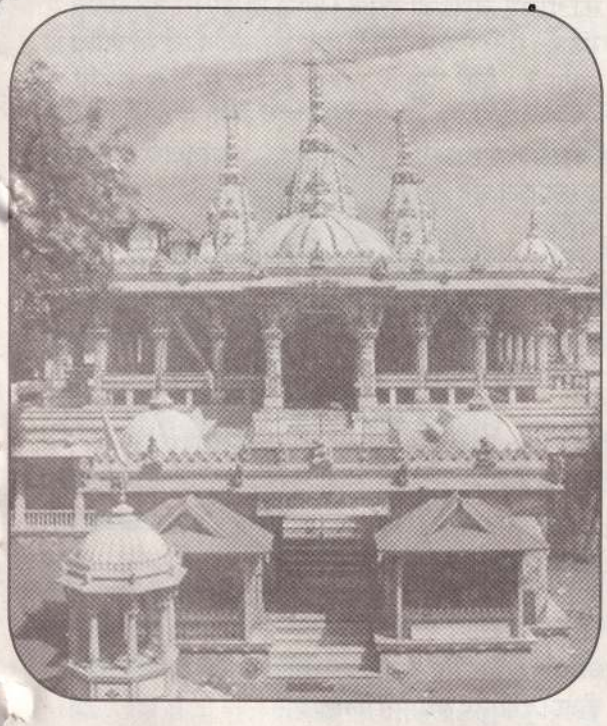
श्रीजी महाराज को प्रिय मूलीधाम

- सांख्ययोगी कंचनबा (ध्रांगध्रा स्वा. मंदिर)

श्रीजी महाराज को झालावाड खूब प्रिय था । मूली धाममें एक वर्ष में दो महीना रहते थे । महाराज को झालावाड का सत्संग बहुत अच्छा लगता था । ऐसे झालावाड के एक गाँव ध्रांगध्रा में श्रीजी महाराज पधारे उस समय चौवीस दिन तक चौवीसों अवतारों का दर्शन दिये थे। उसकी यहाँ चर्चा करते हैं - श्रीजी महाराज काठियावाड तथा झालावाड के हरिभक्तों को पत्र लिखे कि आप सभी जिस स्थिति में हों पत्र पढते ही घर से निकल पड़ना और जेतलपुर में गोविन्दानंद स्वामी के पास जाकर साधु बनकर आइयेगा ।

इस तरह अठारह साधु तथा हरिभक्तों को साथ लेकर महाराज ध्रांगध्रा आ रहे थे । पत्थर खानों का गाँव अर्थात् ध्रांगध्रा । ध्रांग - पत्थर, धरा-जमीन यह गाँव राजाओं का था । यहाँ गाँव के बाहर अनेक तालाब हैं । जिसे आज जोगासर कहते हैं । उसी जोगासर के किनारे संतो के साथ प्रभु निवास करते थे । गाँव के हरिभक्त सभी के भोजन की व्यवस्था करते थे ।

उस समय ध्रांगध्रा के राजकुमार रणमलसिंहजी को



सोना खरीदना था। ध्रांगध्रा के एक हरिभक्त जिनका नाम मूलजीभाई ओझा था वे सोना के व्यापारी थे। राजकुमार उन्हें अपने पास बुलाये, और वातचीत के दरम्यान राजकुमार ने कहा स्वामिनारायण बहुत चमत्कारिक हैं। हम सुने हैं कि बगल वाले गाँव के कुछ लोग उनके एक ही निर्देशपर घर-बार छोड़कर साधु हो गये हैं। उनका हम दर्शन करना चाहते हैं।

हरिभक्त मूलजीभाई ने कहा महाराज इस समय संयोग से ही आये हुये हैं। आप बिना बताये स्वयं जाकर दूर से दर्शन कर आईए यह सुनकर राजकुमार तुरंत घोड़ापर सवार होकर दर्शन करने गये। श्रीजी महाराज वट वृक्ष के नीचे बैठे हुये थे। राजकुमार दोनो भाई घोड़े से नीचे उतरकर महाराज के पास जाकर चरण स्पर्श करके पास बैठ गये। उनके दिव्य दर्शन से उन्हे अत्यन्त शांति मिल रही थी। अन्य संतो को भी योग में लगे देखा तो उनके मन आदर का भाव उत्पन्न हुआ और कहने लगे कि आप लोग यहाँ जाइयेगा नही, कल के भोजन की व्यवस्था हमारे यहाँ से रहेगी। राजकुमार घर गये संम्पूर्ण रात्रि में प्रभु के उसी स्वरुप का स्मरण करते रहे।

दूसरे दिन अपने पिता अमरसिंहजी से पूछे कि स्वामिनारायण यहीं तालाब के किनारे रुके हुये हैं, हम दोनो भाई वहाँ जाना चाहते है, तो क्या हम जा सकते हैं? पिता यह सुनकर हाँ कर दिये। लेकिन लाव लश्कर के साथ (घोड़ा, हाथी, सवारी) जाना वहाँ महाराज ने इससे अधिक चमत्कार दिखाया सफेद हाथी, घोड़ा, विमान, पुष्पों के हार सजे हुये नाना प्रकार के बाहन तथा दिव्य अलौकिक ऐश्वर्य का दर्शन करवाये। यह सभी देखकर राजकुमार महाराज के चरण में आकर गिर पड़े और प्रभु से प्रश्न किये कि भगवान को किस तरह प्राप्त किया जा सकता है। श्रीजीने कहा कि देव के अर्चन, ब्राह्मण पूजन, नाना प्रकार के दान, मधुर वाणी, अहिंसा, परस्त्री त्याग, चोरी न करना, दारु का त्याग, इत्यादि कर्म द्वारा प्रभु की प्राप्ति सरलता से होती है। इस लोक में कीर्ति मिलती है। यह सब सुनकर राजकुमार महाराज को अपने यहाँ एक मास तक रखे। जनक राजा की तरह भजन करते हुये राज्य कार्य करते रहे। श्रीजी महाराज से राजकुमार ने पूछा की २६ अवतार कौन-कौन है? तब महाराजने कहा, कृष्ण, रामचंद्र, मत्स्य, कच्छप, वाराह, हयग्रीव, वामन कपील दत्तात्रेय, हंस, यज्ञ, धन्वंतरी, मोहिनी, नरनारायण, ऋषभदेव, नारदजी, व्यास, बुद्धि, नृसिंह, पृथु, सनत्कुमार, परशुराम, बलदेव इत्यादि रुप में स्वयं दर्शन दिये।

तालाब के किनारे रहकर श्रीहरिने संतो को ज्ञान का उपदेश किया और योगाभ्यास करवाया। श्रीहरि के स्मरण हेतु उस तालाब का नाम जोगासर रखा गया। आज भी ध्रांगध्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर की बहने प्रति वर्ष शाकोत्सव जोगासर में करती हैं।

श्रीहरि जिस प्रकार राजकुमार को सत्संग का बल दिया उसी तरह हमें भी शक्ति दे ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना

●

मूलजी ब्रह्मचारी

- जयश्री सुरेश झिंझावाडिया (ध्रांगध्रा)

भगवान स्वामिनारायण बहुत दयालु थे। इस के साथ उस समय समाज में फैले हुये कुरिवाजों को दूर करने के लिये कृत प्रयत्नशील थे। ऐसे प्रभु के संत तथा भक्त भी कोटि-कोटि प्रणाम के अधिकारी है। उन्हीं में से एक मूलजी ब्रह्मचारी थे जो निरन्तर प्रभु की सेवा में रहते थे।

मूलजी ब्रह्मचारी मछियाव के औदिच्य ब्राह्मण थे । रामानन्द स्वामी के समय से वे सत्संग में थे । बाद में महाराज का सत्संग होते ही वे अनन्याश्रित हो गये । नित्य श्रीजी महिमा का ही गुणगान करते रहते । उन्हे गुणगान के समय शरीर का भान भूलजाता था और समाधिस्थ हो जाते थे । यह सब जानकारी दरबार में हुई कि वे मूलजी का घर-दुआर-खेत सब लेलिये और उन्हें गाँव में से निकाल दिया । उसी सयम से महाराज की सेवा में रहने लगे । गाँव में से निकलने के बाद चार महीना हो गया, पर बरसात नहीं हुई । सभी को ऐसा हुआ कि दरबार ने इन्हें गाँव से निकाल दिया है इसलिये वरसात नहीं हुई है । सभी दरबार से कहे । दरबार तुरन्त मूलजी के नाम एक पत्र लिखा कि आप वापस आ जाइये आपका घर-दुआर-जमीन सब मैं वापस दे रहा हूँ । यह पत्र वे महाराज को दिखाये महाराज पत्र पढकर जाने की आज्ञा दे दी । दरबार मूलजी का स्वागत-सत्कार करके घर-जमीन वापस दे दिया । बाद में तो सभी को सत्संगी बनाकर मूलजी महाराज के पास आ गये ।

वे महाराज की इच्छानुसार अपना जीवन यापन करते थे । महाराज एकवार कच्छ जा रहे थे, साथ में मूलजी थे । मूलजी से महाराज ने पूछा - मूलजी ? आप हमें कैसा मानते हैं । मूलजी ने कहा हम आपको भगवान मानते हैं ।

महाराज ने उन्हें सदा अपने पास ही रखते थे । मूल जी का जितना गुणगान किया जाय कम है । ज्ञान, वैराग्य, आत्मनिष्ठ तथा भगवान की महिमा के साथ भक्तिवाले थे । उनका जीवन केवल भगवान को प्रसन्न करने के लिये था । अक्षरस्वरुप थे । प्रभु जैसे रखते वैसे वे रहते थे ।

महाराज उन्हें महिलाओं के साथ बात करने की छूट दी थी । महाराज कहते थे कि मूलजी को स्त्री का भान नहीं है । ये शुकदेवजी की तरह निर्विकारी हैं । हजारो स्त्रियों के बीच में रहने पर भी उन्हें विकार नहीं हो सकता ।

ऐसे प्रभु के परम आदरपात्र मूलजी का गुण लिखना असंभव है ।

●

सच्चे संत सत्संग के अलंकार है

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊँझा)

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान सर्व प्रथम जब लोज गाँव में पधारे उस समय पू. रामानन्द स्वामी से दीक्षा प्राप्त किये थे । उसके बाद महाराज ने सत्संग का इतना पोषण किया कि ५० में से ५०० कर दिये । आज वही संतो की परंपरा चली आ रही है । आज तो हजारो की संख्या में संत हैं । संतो में ऐसे गुण है । कि अशक्य कार्य भी शक्य हो जाता है । कैसे दुर्गुणी आदमी हो वह संतो के सत्संग से गुणवान हो जाता है । महाराज स्वयं सभा में कहते कि संत जिस पक्ष में हो उसी की विजय होने वाली है । लेकिन संत कैसा होना चाहिये ? धर्मकुल के आश्रित तथा उन्हीं की आज्ञा में वर्तन करने वाला होना चाहिये । इस जगह भगवान तथा संत सिवाय अपना कोई नहीं है । संसार का संबंधस्वार्थ से भरा हुआ है । सगी मां अपने बेटे को स्वार्थ में पालन पोषण करती है कि बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा । एकवात याद रखने लायक है कि संत द्रोह करने वाले का कभी कल्याण नहीं होता । ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है -



"प्रभु पदप्रकट करावता प्रीति,
भरम मीटावत भारी ।
संत परम हितकारी,
जगत मांही संत परम हितकारी ॥"

स्वामिनारायण भगवानने अपने दत्तक पुत्र पू. आचार्य महाराजश्री को शिक्षापत्री में आज्ञा की कि संतो का आदर करना । स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

संत विना साची कोण कहे साचा सुखनी वात,
दया रही छे जेना दिलमां नथी घर मां छात.
जेम जननी ने हेये हेत छे, सदा सुतने साथ,
अरोगी करवा अर्भक ने पाये कडवेरा क्वाथ.
जे भरी भरे भारे चटको पलटवा ईयडनुं अंग,
संतो कटु वचन कहे आपवा आपणो रंग.
संतो जाणे सगा सहुना जीवन जरुर जाणी,
निष्कुलानंद निर्भय कहे आपे पद निर्वाण.
संत विना साची कोण कहे साचा सुखनी वात.

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

दीपावली का त्यौहार स्थायी रहता है क्या ?

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

जय स्वामिनारायण गणेश ? अहोहो..... हरेश तूं ! धन्य घड़ी जो तूं मिल गया । बड़े समय के बाद इधर आया । हाँ, क्या करें यार, ऐसा फंसा हुआ हूँ कि टाइम ही नहीं मिलती । नाना विधजंजाल तो चलता ही रहता है । यह दीपावली का समय है, इसलिये अच्छा लगता है । अब दीपावली भी गयी, जहाँ के तहाँ फिर वापस ।

देखो भाई हरेश ऐसा नहीं है । दीपावली गयी नहीं । क्या वात करते हो गणेश ! तुम्हारी तारीख कुछ अलग लग रही है । नहीं भाई ऐसा नहीं । मेरी वात तो सुनो । हाँ बोल ! तो देख जिसके जीवन में भक्ति हो, सत्संग हो, सेवा हो, उसके जीवन में स्थायी दीपावली नित्य दीपावली होती है । परेसानियाँ बहुत दूर चली जाती हैं । आज ही एक बात वांचने में आयी ।

एक सत्संगी के घर महानुभावानंद पधारे हुये थे । उनकी बिदाई के समय हरिभक्त ने कहा, स्वामी ? आप गाड़ी में बैठिये, आपको जहाँ जाना है छोड़ दूंगा । गाड़ी तैयार हो गयी । उस हरिभक्त को अपेन्डिस का रोग था । उस जमाने में आपरेशन की व्यवस्था नहीं थी । जब कभी तकलीफ होती तो दबाकर उसे ऊपर कर देते । इतनी तकलीफ देखकर सभी लोग कहने लगे भगत आप रहने दो कोई दूसरा स्वामी को छोड आयेगा ।

बैलगाड़ी में ऊपर नीचे होते रहने से तकलीफ बढ सकती है । भगतने कहा भले तकलीफ बढ जाय, कितनी बढेगी भगवान के धाम इसी बहाने जाने का अवसर मिल जाएगा । जो भी हो मैं स्वयं स्वामी को छोड़ने जाऊँगा । वह भक्त बैलगाड़ी में बैठाकर स्वामी को छोड़ने गया । उधर स्वामी बैलगाडी मैं बैठकर माला फेरने लगे .

बैल अपनी मस्ती में चले जा रहे थे । उसी सयम एक खेत में से एक खरगोस कूदा और बैल भडक गये । उस समय वह भक्त भी बेभान (बेध्यान) था । इसलिये गाड़ी से नीचे गिर गया । इतना ही नहीं गाड़ी की पैहिया उसके ऊपर से चली गयी । अब महानुभावानंद विचार में पड़ गये कि जिस गाड़ी में मैं बैठा हूँ उसी गाड़ी की पैहियां के नीचे भक्त दब गया है । वजनवाली गाड़ी । प्रभु आप उसकी रक्षा करना । वह भक्त भी मूर्छित हो गया था । कारण यह कि पेट के दोनो तरफ अपेन्डिस थी, उसी तरफ से पैहिया निकल गयी थी । लेकिन भगवान की कृपा से कुछ नुकशान होने की जगह अच्छा हो गया । वह इस तरह कि जो गांठ-बारंवार बाहर आती थी वह गाड़ी के पैहिया से इस तरह दब गयी जैसे उसका अस्तित्व ही न हो । यह प्रभु की लीला नही तो और क्या ? उस भक्त के लिये चमत्कार हो गया ।

वह खड़ा हो गया । स्वामीने कहा भगत तुम आराम करो, मैं चलकर चलाजाऊँगा । नही स्वामी, हम आपको छोड़े बिना वापस नहीं जायेंगे । स्वामी को सामने वाले गाँव में छोड कर आया । अब वह अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगा । किसानी का भारी से भारी काम करने में तकलीफ नहीं होती थी । यह देखकर सभी को आश्चर्य हुआ और पूछने लगे, अरे, भगत तुम्हारा ऐसा रोग है, अब तुम इतना कठिन काम कैसे कर रहे हो, इसका क्या कारण है । बहुत पूछने पर उसने कहा सुनो - महानुभावानंद स्वामी जैसे संत गाडी में बैठे हो गाडी के बैल एकाएक भड़क उठे बाद में गाड़ी से नीचे गिर जाय और गाडी की पैहिया पेट के ऊपर से निकल जाय तो अपेन्डिस ठीक हो जाय ।

देखो भाई हरेश, सभी की दीपावली गयी लेकिन इस भक्त की दीपावली तो सदा है । इतनी बड़ी आपत्ति आयी वह भी चली गयी । आनंद से भजन करने लगा । गृहस्थी के सभी कार्य करने लगा । यही सेवा का फल है । इस प्रकार जिसके जीवन में भगवान भुलाते नहीं, भजन भूलती नही, सत्संग भूलता नही उनके लिये महानुभावानंद कहते हैं कि -

"ब्रह्मानंद ना रे वहाला, तमारा संग रमता मारे ।
दहाडी दहाडी छे दीवाली हैडामां मुने व्हाला ॥"

वाह गणेश वाह ! तुमने तो मेरी सभी चिंता दूर कर दी । अब मेरे जीवन में सदा के लिए दीपावली करदी । अब हम कभी भी भजन-भक्ति, सेवा-सत्संग नहीं भूलेंगे । तुम्हारा खूब-खूब आभार । जयश्री स्वामिनारायण ।

मित्रों ! आप सभी इस लेख को वांचकर यह अनुभव किये होंगे कि आप के जीवन में ऐसे ही दीपावली आये ।

•

भक्त की परीक्षा कभी भी हो सकती है

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

आप कभी मिलेट्री वालों की ट्रेनिंग देखे होंगे । किस तरह हथियार चलाना, किस तरह शत्रु को पकडना । सैनिको को ट्रेनिंग के बाद का भी पराक्रम सभी देखे है । लेकिन धर्म की ट्रेनींग देखे हैं ? इस परीक्षा के विषय में क्या सुने हैं ? यदि सुने नही है तो जेतलपुर में तुलजाराम की परीक्षा के विषय में सुनें ।

भगवान श्री स्वामिनारायण जेतलपुर में विराजमान थे । जेतलपुर के विषयमें निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है–

धन्य धन्य जेतलपुर धाम,
वहाले कर्यु जेने निजधाम ।
तीयां मरे पापी नरनारी,
ते तो न जाय जम ने द्वार ॥

इस तेजलपुर में महाराज के तथा संतो के इतने अधिक चरित्र हुये है कि यहाँ कितना बड़ा पापी हो वह यमपुरी नही जाता है । एक समय भगवान स्वामिनारायण जेतलपुर में विराजमान थे बड़ी सभा का आयोजन हुआ उस समय प्रांतीज के एक भक्त तुलजाराम आये । तुलजाराम प्रभु को प्रणाम करने लगे । उसी समय प्रभु ने उनसे पूछा कि आप कब से सत्संगी हुये हैं ? स्वामिनारायण भगवान का प्रश्न बड़ा महत्व का है । तुलजाराम तुरंत उत्तर दिये । महाराज ? रामानंद स्वामी के समय से सत्संगी है । करीब बीस वर्ष हो गया है ।

श्रीहरिने कहा, तो देहभाव अभी है या नहीं ?

अन्दर से आत्मभाव उत्पन्न हुआ या नहीं ?

प्रथम प्रश्न तो समझा जा सकता है, कितने वर्ष से सत्संग में हैं ? दूसरे प्रश्न में महाराजने ''आत्म भाव जगाया या नहीं ? देह भाव गया या नही ? जो पूछा उसका उत्तर बड़ी सरलता से भक्त ने दे दिया । जैसे बड़ी सजगता से अभ्यास करने वाला विद्यार्थी सरलता से उत्तर दे लेता है उसी तरह की यह वात है । देह भाव खत्म होने में गुरुकृपा या भगवतकृपा होनी परम आवश्यक है । आत्मभाव भी गुरुकृपा या भगवतकृपा से सम्भव है ।''

महाराज के इस प्रश्न का उत्तर तुलजारामने बडी सरलता से दिया । हे महाराज ? मैं सच्चिदानंद रुप हूँ । सुख दुःख का भाव अब समाप्त हो चुका है । मैं आपका दास हूँ । मैं आत्मा हूँ ।

तुलजाराम का यह अडिग उत्तर सिंह गर्जना के समान था । सिंह कभी घास नहीं खाता । भक्त कभी देह का दास नहीं होता । यह सहजानंदी सिंहकी बात है । चाहे जितनी परीक्षा हो लेकिन पैर पीछे नहीं होगे ।

महाराजने कहा, ओहो !''बडे आत्मनिष्ठ हैं देखे तो'' एक पार्षद की तलवार महाराज ने मंगवाया ।

आओ देखता हूँ । कैसे आत्मरुप हैं ? प्रभु हाथ में तलवार लिये और कहने लगे कि तुलजाराम अब बोलो देह भाव है या नहीं ? आत्मा भाव है या नहीं ? महाराज मैं आत्मा हूँ । लो तलवार मस्तक पर गिरती हैं ? सामान्य व्यक्ति हो तो डर जाय । उसके मन में भाव आयेगा कि महाराज तारनहार हैं या तलवार लेकर डारनहार हैं । लेकिन परीक्षा किसकी होती हैं । सहजानंदी सिंह की । तुलजाराम का निश्चय अडिग था । वह जानते थे काल, कर्म, माया का हमारे मस्तक पर कोई भार नहीं हैं । सुख, दुःख के दाता, कर्ता, धर्ता सब कुछ मेरे लिये महाराज हैं । उन्हीं की दया से हम आत्मरुप हुये हैं । इसलिये देह का भाव या मोह समाप्त हो चुका है ।

तुलजाराम ने उत्तर दिया महाराज ! आत्मा को तलवार कैसे काट सकती है ।

''वीक तजीने रे, नितहिंमत सो तो बोले ।
मस्तक माया रे, सर्वे तृण जेवुं तोले ॥''

तुलजाराम के उत्तर में सहजानंदी सिंह की गर्जना थी । इतने से महाराज नहीं रुके और कहने लगे कि अभी आप चिल्लाने वाले हैं । महाराज इसकी हमें चिन्ता नहीं । हमें कोई भय नहीं है । आप तलवार का प्रयोग करें । मैं अपने आपको धन्य समझूंगा । लो सावधान होकर तलवार की मार को झेलो । यह सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोगों के पशीने छूट गये । सव विचार करने लगे कि महाराज क्या करने वाले हैं । इतने में महाराज तलवार अलग फेंक कर तुलजाराम की पीठ थप थपाने लगे । भक्तराज आप धन्य हैं । इसी को आत्म भाव कहते हैं ।

मित्रो ! जगत तथा भगत का रास्ता अलग है । जगत के जीव अहं तथा ममत्व से बंधे होते हैं । जगत के सुख दुःख के चक्कर में ऐसा फंसते हैं कि उसमें से बाहर ही नहीं निलक सकते । जब कि भगवान के भक्त इससे परे होते हैं । जो कुछ होता है वह हमारे इष्टदेव की इच्छा से होता है । सुख हो या दुःख दोनो में समान भाव रखकर भगवान की भजन करते रहते हैं । इन्हें ही आत्म निष्ठ कहा जाता है । जो भगवान के भक्त होते हैं वे ही भगवान की कसौटी में पास होते हैं ।

प्रश्नपेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर

प्र.१ जीवुबा के सास का क्या नाम था ?

प्र.२ "प्रेम भक्ति जेने घर आवे, तेहने रंग हरि राचे रे" इस कीर्तन के रचयिता कौन हैं ?

प्र.३ शिक्षापत्री के १२० वें श्लोक में क्या आज्ञा है ?

प्र.४ जूनागढ के नवाब का क्या नाम था ?

प्र.५ "मारा जीवनमां बे-बे सद्गुरु ना सूरज आथी गया अने हुं अभागणी एमनी एम जीवु छुं" ऐसा कहने वाली गंगामां के दो सद्गुरु कौन थे ?

प्र.६ श्रीमद् भागवत के दशम स्कंधमें शकटासुर का मोक्ष श्रीकृष्ण भगवानने किया, वह शकटासुर पूर्वजन्म में किसका पुत्र था ?

प्र.७ अद्भुतानंद स्वामी के मामा कौन थे ?

अक्टूबर मास २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) शिक्षापत्री श्लोक १२९

(२) ग.म. २२

(३) अचिन्त्यानंद वर्णी

(४) १. पद्म, २. महापद्म, ३. शंख, ४. मकर, ५. कच्छप, ६. मुकुन्द, ७. कुंद, ८. नील, ९. खर्व

(५) गिरधरभाई अपने रहने के लिये हवेली बनाई थी । श्रीजी महाराज तथा संतो का पदार्पण कराकर वास्तुपूजन कराना था ।

(६) "लगाड़ी तें प्रीति लाल रे, प्रीति लडी में तो लगाडी ।"

(७) अविनाशानंद स्वामी ।

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर भाईयो का - सीतापुर

२. सांख्ययोगी कोकिला बा, उषाबा - सुरेन्द्रनगर

३. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल वाला

४. साकरबहन नटवरभाई पटेल - नांदोल

५. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल

६. सांख्ययोगी रसीलाबा तथा अस्मिताबा - अहमदावाद हवेली

७. सांख्ययोगी रंजनबा, रेखाबा - बालासिनोर

८. सांख्ययोगी भारतीबा, मंजुबा - कालुपुर हवेली

९. सांख्ययोगी शिल्पाबा, शीतलबा - कालुपुर हवेली

१०. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोडिया

११. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा

१२. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर

१३. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर मूली देश

१४. पटेल गोरधनभाई शंकरभाई - सोजा

१५. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव

१६. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव

१७. सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई

सत्संग समाचार

अम्दाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपोत्सवी प्रसंग पर नानाविधउत्सव संपन्न

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के दिव्य अलौकिक सांनिध्य में तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में तथा अहमदाबाद मंदिर के विद्वान महंत शास्तरी स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन में दीपोत्सव के प्रसंग पर भव्य उत्सव खूब धूमधाम से मनाया गया था।

समूह शारदा पूजन एवं हिसाबी रजिस्टर पूजन

संप्रदाय के परंपरानुसार शास्त्रोक्त विधिसे समूह शारदा पूजन एवं हिसाबी रजिस्टर पूजन ता. १७-१०-०९ शनिवार को सायंकाल ५-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ। सतत दो धन्टे से भी अधिक पूजन विधिचली थी। जिस में अहमदाबाद शहर के तथा गाँव के ८०० जितने व्यापारी हरिभक्त अपने उद्योग दंधा से सम्बन्धित लेखा-जोखा रजिस्टर एवं लेपटोप कम्प्यूटर की पूजा कराकर आधुनिकता तथा धार्मिकता का सन्वय किये थे। कालुपुर मंदिर के विद्वान संत शा.स्वा. हरिकृष्णदास के सूक्ष्म मार्गदर्शन में इलेक्ट्रोनिक मीडिया की दूर दर्शन इ.टीबी., बीज टीवी., गुजरात चेनल, तथा टीवी-९ जैसी अनके चैनलों के माध्यम से गुजरात की करोड़ो धार्मिक जनता ने इस प्रसंग का प्रत्यक्ष दर्शन करके भाव विभोर हो गयी थी।

अन्नकूटोत्सव दर्शन

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के छप्पन भोग अन्नकूट का अलौकिक दर्शन एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा आरती का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया ई.टीवी तथा टीवी-९ द्वारा गुजरात की जनता ने दर्शन का लाभ लिया था। यहाँ मंदिर में हजारो भक्तजन अन्नकूट के दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया।

नूतन वर्ष की प्रातः ५-०० बजे मंगला आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजने उतारी थी। इस प्रसंग पर संत हरिभक्तो की भीड़ मंदिर में समान रही थी। शहर तथा गाँव के भाग्य से ही कोई हरिभक्त दर्शन के बिना रहे होंगे। यथार्थ में तो ऐसे भव्य मंदिर में नूतन वर्ष के शुभ अवसर पर साक्षात् परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का दर्शन मात्र भाग्य शाली को ही पत्स हो सकता है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने बैठक कक्ष में हरिभक्तों को नूतन वर्ष के अवसर पर दर्शन का लाभ दे रहे थे। इसी तरह हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू. बड़ी गादीवालजी तथा प.पू. श्री राजा दर्शन-आशीर्वाद दे रही थी। कोठार आफिस में पू. महंत स्वामी अनेकों भक्तों को नूतन वर्ष का आशीर्वाद दे रहे थे। इस उत्सव मे प्रसंग पर पार्षद दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन में जे.के. स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, नटु स्वामी (जूनागढ), निलेश भगत, भूषण भगत तथा चेतन भगत इन सभी ने सुन्दर सेवा की थी। काठियावाडी हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी। २९ देशों के सभी हरिभक्त अन्नकूट प्रसाद ग्रहण किये थे। कलेन्डर तथा जट्टा का वितर तो कार्तिक शुक्ल त-तीया तक पूर्ण हो चुता था। हरिभक्त भी इस प्रकार की प्रवृत्त देखकर बहुत प्रसन्न हो गये थे। दीपोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष तथा सभा मंडप में दरवाजा के ऊपर सुन्दर रोशनी की व्यवस्था की गयी थी। दीपोत्सव को सभी बड़े आनदं के साथ मनाये थे। दर्शन का लाभ लेकर सभी आत्म संतुष्टहो गये थे।

– को. जे.के. स्वामी

कांकरिया मंदिर में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से काली चौदश के दिन हनुमानजी महाराज के समक्ष मारुतियज्ञ धूमधाम से मनाया गया था। जिस की पूर्णाहुति स.गु. शास्त्री स्वामी माधवप्रसाददासजी संतो के साथ किये थे। रात्रि में उत्सव मंडल द्वारा कीर्तन तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। सभी भक्त दर्शन का लाभ लिये थे।

लाभ पंचमी – को कष्ट भंजन देव के समक्ष उत्सव किया।

इस प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस तरह सम्पूर्ण धर्मकुल दर्शनार्त पधारा था।

प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो से कष्ट भंजनदेव का महाभिषेक किया गया था। यहाँ के कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री ठाकुरजी का भोजनालय, संत निवास निर्माण का भूमि फूजन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से किया गया था। इस प्रसंग पर महापूजा का भी आयोजन किया गया था। विशाल सबा में पू. लालजी महाराजश्री ने बारस्वरुप कष्टबंजन देव की महिमा बहुत सुंदर ढंग से समझाई थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद तथा जेतलपुर से संत पधारे थे।

– नरोत्तम भगत

जूना वाडज में श्रीमद् भागवत सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत देव स्वामी तथा पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में ता. २१-१०-०९ से ता. २७-१०-०९ तक वक्ता स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने प्रातः सायं कथामृत का लाभ दिया था। जिस के यजमान केशवभाई नाथाभी काथरोटिया, नाथाभाई डुंगरभाई काथरोटिया के पुण्य स्मृति में गं.स्व. रणीयात बहन केशवभाई काथरोटिया परिवार थे।

ता. २७-१०-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से पारायण की पूर्णाहुति की गयी थी। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी इत्यादि संत आशीर्वचन किये थे। जूना वाडज, नवा वाडज तथा अगल बगल के विस्तार के हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे। श्री मनहरभाई तथा संजयभाई काथरोटिया दोनो भाइयों ने अपने पिता के लिये पारायण कराकर पितृऋण से मुक्त होने का अलौकिक लाभ लिया था।

इस प्रसंग पर सभा संचलान युवान संत शा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने किया था। – शा. अभयप्रकाशदास

तीर्थ भूमि वहेलाल मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा साधु चैतन्यमुनि की प्रेरणा से ता. २०-९-०९ के दिन श्री व्रजेन्द्रप्रसाद प्रवेश द्वार तथा भक्तराज जेशींगभाई यात्रिक भवन का शुभ उद्घाटन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से सम्पन्न हुआ। पू. महाराजश्री प्रथम बहनों के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर यज्ञ की पूर्णाहुति करके भाईयों के मंदिर में आरती उतारे थे।

बाद में प.पू. महाराजश्री नूतन निवास भवन में चरणारविंद रखकर यजमान के घर पदार्पण करके सभा में विराजमान हुये थे।

सभा में शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी, जेतलपुर पाठशाला के संचालक हरिओं स्वामी, स्वा. वासुदेवचरणदासजी, इत्यादि संतोने यथोचित प्रवचन किया थआ। इस प्रसंग पर प्रतेयेक गाँव से भक्त उपस्थित थे। सभा संचालन जमीयतपुरा के महंत घनश्याम स्वामीने किया था। यात्रिक भवन के निर्माण का सम्पूर्ण खर्च तथा हरियाग का खर्च वहेलाल के श्री जयंतीभाई भलाभाई पटेल परिवार एवं उनके पुत्र डॉ. अनिलभाई इत्यादि यजमान पद का भी लाभ लिये थे। – गोरधनभाई सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण का सातवां पाटोत्सव धूमधाम से संपन्न

श्रीहरि के प्रसादी वाले तथा श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण का ७ वां वार्षिक पाटोत्सव १३-१०-०९ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवाल तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी संतो के साथ पधारे थे। सर्व प्रथम शा. नारायणवल्लभदासजी तथा पार्षद जशु भगत पाटोत्सव के यजमान की पत्नी से संप्रदाय के मर्यादानुसार महापूजा करवाये। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी घनश्याम महाराजकी आरती उतारी थई। बहनों ने इस दिव्य लाभ को लेकर धन्यता का अनुभव किया था। गाजेबाजे के साथ ठाकुरजी का जुलूस निकाला था। बाद में पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, शा. अखिलेश्वरदासजी तथा प्रहलादभाई पटेलने भाववाही प्रवचन किया था। सभा संचालन नारायणवल्लभदासजीने किया था। यजमान परिवार द्वारा संतो को भेंट अर्पण करके स्वागत किया गया था।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी का स्वागत श्रीमती लीलाबहनने किया था। सभी हरिभक्त इस अवसर का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।

– प्रहलादभाई पटेल न्युजर्सी

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ मंदिर के महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से भाद्रपद कृष्ण-११ जलझीलणी एकादशी को ठाकुरजी का भव्य जुलूस निकाला गया था। शहर के तालाब में लेजाकर ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था। बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर लाब लिये ते। -शैलेन्द्रसिंह झाला

कवि सम्राट स.गु. देवानंद स्वामी के बळोल (भाल) मंदिर का चतुर्थ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के स.गु. कवि सम्राटा देवानंद स्वामी के जन्म स्थान भाल प्रदेश के बळोल गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बडे महाराजश्री के तथा पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (महिलाओं तथा पुरुषों) केमंदिर में चतुर्थ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २९ तथा ३० अक्टूबर दो दिन का ज्ञान यज्ञ शिबिर स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था। इस कार्यक्रम में गाव के सभी स्त्री-पुरुष भाग लिये थे। इस प्रसंग पर तुलसी विवाह का भी आयोजन किया गया था।

जिसके यजमान चावडा घनश्यामभाई तथा चावडा रणछोडभाई भूदरभाई परिवार ने महालाभ लिया था। पाटोत्सव के यजमान चावडा परिवार के बजाभा अरजणभा चावडा, भगवान भा अरजणभा तथा गणेशभा अरजणबा परिवार ने लाभ लिया था। नाथद्वारा मंदिर के महंत धर्मस्वरुपदासजी तथा पार्षद वनराज भगत की प्रेरणा से इस उत्सव का आयोजन किया गया था।

ता. ३०-१०-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ जब पधारे उस भव्य स्वागत किया गया था। बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके आरती उतारकर गाव के भक्तों को महालाभ दिये थए। यहा से प.पू. आचार्यश्री आणंदपुरा गाव के महिला एवं पुरुषों के मंदिर में आरती उतारने पधारे थे। वहा कहरि भक्तों को दर्शनका सुख देकर पुन- बलोल पधारे थे। दोनो मंदिरमें आरती उतारकर सभा में पधारे थे। प्रासंगिक सभा में यजमान चावडा परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर चरण भेंट दी थी। बाद में महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी मूली के महंत स्वामी, चराडवा के महंत स्वामी, शा. अखिलेश्वरदासजी तथा शा. जगतप्रकाशदासजीने मननीय प्रवचन किया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने युवानों को मार्मिक उपदेश देकर आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में सेवार्थ बहुत सारे लोगोने दान भेंट दी थी।

पाटोत्सव प्रसंग पर सेवा के लिये स.गु. शा. लक्ष्मीप्रसाददासजी, स्वा. धर्मप्रियदासजी, अनिरुद्ध स्वामी, शा. चैतन्यास्वरुपदास, भोगीलाल भगत इत्यादी लोगों ने प्रेरणात्मक सेवा किये थे। -खटाणा जेशंगभाई

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनेमेन्सन (अमेरिका) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३७ वें प्रागट्योत्सव को धूमधाम से मनाया गया

विजया एकादशी के शुभ दिन हम सभी के प्राण प्यारे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३७ वां प्रागट्योत्सव यहां के मंदिर में धूमधाम से मनाया गया था। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का सुंदर माहात्म्य समझाया था। कमेटी के हरिभक्तों ने प.पू.ध.धु. महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्चन किया था। श्री नवीनभाई ने सुंदर केक लाकटर सभी के साथ मिलकर काटकर प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया था। प्रेसि. राजुभाई, असोकभाई, अरविंदभाई, केतनभाई, कार्तिकभाई, जदीशभाई इत्यादि भक्तों ने समूहमें आरती उतारकर महालाभ लिया था।

द्वितीय पाटोत्सव संपन्न

सिमन्सन श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की शुभ उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गाय था। इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धपारायण तथा प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के २०० वे जन्म द्विशताब्दी वर्ष होने से २०० समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। शा. विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर कथा का आयोजन किया था। इस प्रसंग पर विविधउत्सवो में अनेकों भक्त भाग लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।

दो सितम्बर को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से देवो का महाभि,क संतो के वरद् हाथों से किया गया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से शा.स्वा. निर्गुणदासजी, विकोहन से शा. माधव स्वामी, बोस्टन से सिद्धेश्वरदासजीने प्रसंग के अनुरुप प्रवचन किया था। श्री राजेशबाई पटेल तथा बलदेवभाई पटेलने प्रवचन किया था। श्री राजेशबाई पटेल

तथा बलदेवभाई पटेल ने मंदिर के विकास पर प्रकाश डाला था। रसोई में बहनों की सेवा सराहनीय थी। वडु, राजपुर तथा मोखासण के हरिभक्तों की सेवा प्रशंसनीय थी। सभा का संचालन शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने किया था।

दीपावली अन्नकूट उत्सव

यहाँ के स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से धनतेरस से नूतन वर्ष तक नाना विधउत्सव मनाये गये थे। दीपावली के प्रसंग पर मंदिर को अच्छी तरह सजाया गया था। अन्नकूट के प्रसंग पर सत्संगी बहनों ने विविधव्यन्जनों को घर से बनाकर ठाकुरजी को अन्नकूट के लिये लायी थी। जिसके यजमान श्री राजूभाई भक्तिभाई पटेल थे। हजारों हरिभक्त दर्शन का लाब लेकर धन्य हुये थे।

- शा.विश्वप्रकाशदास एवं कार्तिकभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इटास्का शिकागो के मंदिर में स्वामी जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) तथा शास्त्री स्वामी हरिप्रसाददासजी तथा पुजारी शांतिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से शरदपूर्णिमा को शरदोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस शुभ अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित थे, सभी को दूध-चिड्डा तथा जलेबी का प्रसाद दिया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३७ वें प्रागट्योत्सव को सभी हरिभक्त एकत्रिक होकर पूजन अर्चन करके धूमधाम से मनाये थे।

८ अक्टूबर को अहमदाबाद मंदिर से पधारे हुए शा. स्वा. निर्गुणदासजी, मुनि स्वामी तथा अन्य संत यहाँ पधारकर कता का अलौकिक सुख प्रदान किये थे। - वसंतभाई त्रिवेदी

क्लिवलेन्ड (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से कोलवंस के निपाक्षी प्रविणभाई तथा भारतीबहन की तरफ से उन्हीं की बड़ी माताजी अ.नि. गंगाबा के स्मरणार्थ स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत यमदंड की कथा शा.स्वा. धर्मजीवनदासजीने की थी। शा. हरिनंदनदासजने श्रीमद् भागवत दशम स्कंधका पुरश्चरण किया था। २७ सितम्बर को कथा की पूर्णाहुति हुई थी। विजया दशमी को अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३७ वे जन्म दिन के उपलक्ष्य में महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी गयी थी।

श्री प्रकाशभाई पटेल ने पुरुषोत्तमप्रकाश में से आचार्यश्री की महिमा का गुणगान किया था। जिसके साथ हरिसबाई लाभ लिये थे। कथा के अंत में ठाकुरजी की आरती उतारी गयी थी। - प्रकाश पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में विजया दशमी महोत्सव

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में समस्त हरिभक्त समाज एक साथ मिलकर विजया दशणी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३७ वाँ प्रागट्योत्सव २७ सितम्बर को धूमधाम के साथ मनाया था। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. माधवप्रसाददासजीने विजया दशमी के माहात्म्य के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री को भी माहात्म्य समझाया था। इसके साथ आई.एस.एस.ओ. की स्थापना का महत्व भी समझाया था। यजमान परिवार स्वामी का पुण्य गुच्छ देकर संमान किया था।

प्रेसिडेन्ट श्री कांतिभाई पटेलने उत्सव के विषय में निर्देश किया था। - पी. शाह

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर चतुर्थ पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ४ सितम्बर को पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी का महाभि,क किया गया था। श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट आरती की गयी थी। इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी, बिन्दु राजाजी, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमारजी, पार्षद वनराज भगत पधारे थे।

बहनो को सुन्दर धर्म का लाभ मिले इस हेतु से प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के सांनिध्य में एक दिन की सभा का आयोजन किया गया था। जिस में प.पू. बड़ी गादीवालाजीने सभी बहनो को आशीर्वाद के रुप में पुष्पहार दिया था। इस शुभ प्रसंग पर चेरीहिल, विहोकन, कोलोनिया, शिकागो, अहमदाबाद, धोलका, कोटेश्वर से संत पधारे थे, जिस में शा.स्वा. निर्गुणदासजी, मुनि स्वामी, ज्ञान स्वामी इत्यादी संतोने ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिया था।

सभा में शा.स्वा. निर्गुणदासजीने श्रीहरि का शास्त्रीय माहात्म्य समझाया था। चेरिहिल के स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने भी सुंदर वर्णन किया था। कोटेश्वर के रामकृष्णदासजीने भी भगवान की लीलाचरित्रों का वर्णन किया था।

बहनो की सभा में प.पू. बड़ी गादीवालाजी का पूजन अर्चन करके यजमान परिवारने आशीर्वाद प्राप्त किया था।

- श्री नरनारायण युवक मंडल

न्युयोर्क में सत्संग सभा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

२७ सितम्बर रविवार को विकेन्ड में कविन्स में आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टरो में संत एव ं साथ मिलकर विजया दशी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री का ३७ वा प्रागट्योत्सव मनाये थे । शा.स्वा. माधव सददासजीने प्रासंगिक सभा में पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में सभी भक्त हिलमिलकर सत्संग करे एसा निवेदन कि या था । प.पू. आचार्य महाराजश्री भगवान के अपर स्वरुप है । इस लिये हम सभी बड़ी भाग्यशाली है जो भगवान के अपर स वरुप गुरु के रुप में मिले हैं । अंत में ठाकुरजी की आरती उत रकर प्रसाद वितरित किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्र के संकल्प से यहाँ का मंदिर जल्दी तैयार हो इस तरह सभी ने प्रार्थना की थी। - श्री नरनारायण यु वक मंडल

वोशिंग्टन डी.सी.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां १९ सितम्बर शनिवार सायंकाल ४-०० बजे से १०-३० बजे तक इल्करीज (मेरीलेन्ड) के एक हाल में सत्संग सभ ा में धूम भजन कीर्तन का आयोजन किया गया था । बहने जिसकी खूब प्रतीक्षा कर रही थी ऐसी प.पू. बडी गादीवालाजी बहनों की सभा में पधारकर बहनों को धून-कीर्तन कराकर आनंद की लहर फैला दी थी ।

विहोकन मंदिर के महंत शा.स्वा. माधवप्रसाददासजीने सेलपोन के माध्यम से अमृतवाणी का लाब दिया था । भाईयों की तथा बहनों की अलग व्यवस्था का ध्यान रखकर प.पू. बड़ी गीदावालाजीने ठाकुरजी की आरती उतारी थी ।

प.पू.अ.सौ. बड़ी गीदावालजीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३७ वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर केक काटकर जन्मोत्सव को धूमधाम से संपन्न किया था । २ घंटे तक बहनो के साथ प.पू. गादीवालजी रास खेलकर आनंदित की थी । पार्षद वनराज भगत वचनामृत का अमृतपान कराये थे । २५ सितम्बर शुक्रवार को सायं ७-०० बजे से १०-०० तक मिटिंग होल में सत्संग सभा में ठाकुरजी के समक्ष धुन, कीर्तन, वचनामृत वाचन, नित्य नियम करके आरती उतारी गयी थी । बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर लाभ लिये थे और अपने जीवन को कृतार्थ किये थे ।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर : प.पू.ध.धु. आच ार्यश्री वासुदवप्रसादजी महाराजश्री से लेकर वर्तमान प.पू. लालजी महाराजश्री तक पांच पीढी से सेवा करनेवाले पार्षद हरगोविंद भगत गुरु पार्षद केशा भगत दि. २५-१०-०९ रविवार को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

मुंबई-बोरीवली : श्री मनसुखभाई गोकुलभाई मारवी (जीरागढ-हालार) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये दि. २२-८-०९ को अक्षरनिवासी हुये हैं।

लालोडा (ईडर देश) : श्री अमृतभाई पटेल की माताजी प.भ. गंगाबहन हीराभाई बालाभाई पटेल श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुये दि. १०-९-०९ को अक्षरनिवासी हुये हैं।

सापावाडा (ईडर देश) : प.भ. कंकुबहन हरिभाई पटेल श्री हरिका अखंड स्मरण करती हुइ दि. ५-९-०९ को अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

कलोल : प.भ. शकराभाई मणीलाल दरजी (दानपेरी के से वक) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये दि. २८-८-०९ को अक्षरनिवासी हुये हैं।

बोरडी (अमरेली) : प.भ. कान्ताबहन गोबरभाई कातरिया श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुइ दि. ६-९-०९ को अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

अहमदाबाद : प.भ. बिपीनभाई कवि तथा श्री प्रशांतभाई कवि (शिकागो) के पिता श्री बलवंतराय दशरथलाल श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये दि. २१-१०-०९ को अक्षरनिवासी हुये हैं।

मुंबई : प.भ. ज्योतिबहन डॉ. जमनदासभाी गोमती दि. ८-१०-०९ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

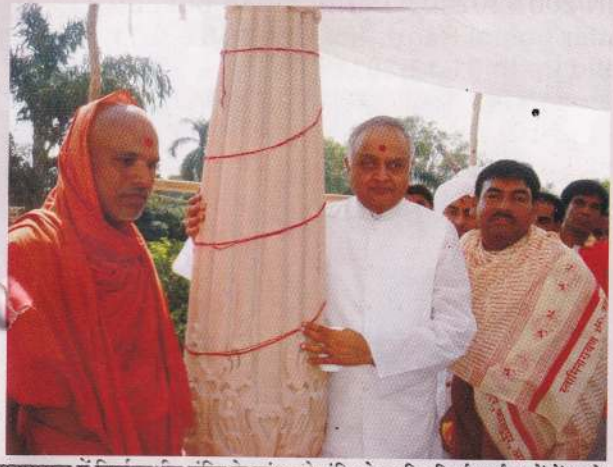
कन्नीपुर : प.भ. रमणभाई नारणभाई पटेल दि. १-१०-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

जीरागढ (हालार) : प.भ. दयालजीभाई टांक (सुरत) के पिताश्री मोतीलाल मेघजी टांक दि. २२-९-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

डांगरवा : प.भ. राकेशकुमार पटेल (अमेरिका) के पितश्री रमणलाल जोइतनदास पटेल आश्विन शुक्ल-१२न को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : प.भ. जेठाभाई रणछोडभाई पटेल आश्विन कृष्ण अमावास्या को दि. १८-१०-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

Editor, Printer and Publisher : Mahant Shastri Swami Harikrishnadasji for Shree Swaminarayan Temple Kalupur, Ahmedabad. Printed at Shree Swaminarayan Printing press, Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad (GUJARAT) Pin-380 001 and Published at and for Shree Swaminarayan Temple, Kalupur, Ahmedabad (GUJARAT) Pin-380 001.



प्रयागराज में निर्माणाधीन मंदिर के स्तंभ को मंदिर के त्वरित निर्माणार्थ बाहों में भरते हुये तथा आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ पू. नारायण स्वरुपदासजी



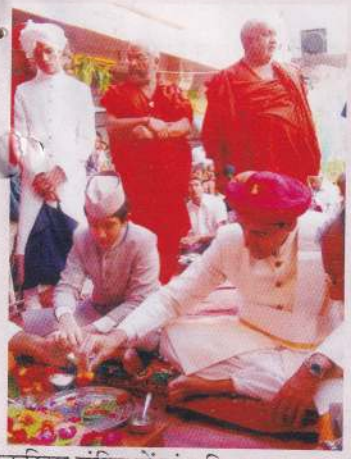
प्रयागराज में स.गु. रामानंद स्वामी तथा जहाँ श्री धर्मदेव का जहाँ पर मिलन हुआ उस प्रसादी के स्थल पर छत्री का भूमि पूजन करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायणमंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री



सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



कांकरिया मंदिर में संत निवास का भूमिपूजन करते हुये पू. महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री



छपैयाधाम में महापूजा प्रसंग पर पूजन विधि करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



छपैयाधाम में महापूजा की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ स्पेश्यल ट्रेन के आयोजन श्री प्रफुलभाई गढवी परिवार (जिन्होंने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में उत्तम सेवा की है)



बद्रिनाथ धाम अपने मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुये महंत पू. देवप्रकाशदासजी तथा ब्र. राजेश्वरानंदजी

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



एटलान्टा (ISSO) चेप्टर में अन्नकूट दर्शन



झांबीया अपने मंदिर में अन्नकूट दर्शन





शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन तथा हरिभक्तों की विशाल सभा



बायरन (अमेरिका) ISSO चेप्टर में अन्नकूट दर्शन



नारायणघाट मंदिर में ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन

Jagdish Offset

Praful Kharsani